नरोड़ा आर्ट्स एण्ड कॉमर्स कॉलेज (हिंदी विभाग)

बी.ए.सेम-6 हिंदी

पेपर-312,हिंदी व्याकरण

वर्ष-2022-2025

प्रस्तुतकर्ताः- डॉ.जशाभाई पटेल

नाम-

रोल नंबर-

डॉ जशाभाई पटेल

बी.ए.हिंदी सेम-6 **पाठ्यक्रम** **पेपर-312**

युनिट-1.वर्ण और शब्द-भेद

वर्ण की परिभाषा और हिंदी वर्ण के प्रकार - स्वर और व्यंजन

संज्ञा की परिभाषा और प्रकार

सर्वनाम की परिभाषा और प्रकार

युनिट-2.शब्द-भेद

विशेषण की परिभाषा और प्रकार

लिंग और वचन

क्रिया की परिभाषा और प्रकार- अकर्मक,सकर्मक और संयुक्त

युनिट-3. शब्द-रचना

कारक और विभक्ति

उपसर्ग और प्रत्यय

समास की परिभाषा और प्रकार

युनिट-4.वाक्य-रचना

विराम चिह्न

संधि की परिभाषा और प्रकार

वाक्य की परिभाषा और अर्थ के आधार पर वाक्य के प्रकार- विधिवाचक,प्रश्नवाचक, निषेधात्मक आदि।

रचना के आधार पर वाक्य के प्रकार- सरल,मिश्र,संयुक्त

डॉ.जगशभाई पटेल

युनिट-1(वर्ण,संज्ञा,सर्वनाम)

वर्णऔरउसकेभेद

वर्ण की परिभाषा- ***"वर्ण उस मूल ध्वनि को कहते हैं जिसके खण्ड या टूकड़ेनहीं होते हैं।"*** **(वासुदेवनंदनप्रसाद)**

"भाषा की लघुतम इकाई को वर्ण कहते हैं।"

(कामताप्रसाद गुरु)

"प्रत्येक शब्द के खण्ड करने पर प्रत्येक पृथक-पृथक इकाई जो हमारे हाथ लगती है,वही वर्ण हैं।"

(उमेशचन्द्र शुक्ल)

जैसे-'पुस्तक'-प्+उ+स्+त्+अ+क्+अ-- इस प्रकार पुस्तक शब्द में सात वर्णो का प्रयोग हुआ है।इन सात ध्वनियों में किसी का भी खण्ड नहीं हो सकता,अत:ये वर्ण हैं।

- **वर्णमाला- "किसी भाषा के समस्त वर्ण-समूह को वर्णमाला कहते हैं।"**

हिंदीमें कुल 52 वर्ण है।

हिन्दीमें दो प्रकार के वर्ण है-

1.स्वर वर्ण

2.व्यंजन वर्ण-

1.स्वर वर्ण-

हिंदी में पहले 11 स्वर- अ,आ,इ,ई,उ,ऊ,ए,ऐ,ओ,औ,ऋ स्वीकृत है। अब ऑ भी स्वीकृत स्वर है।

स्वर की परिभाषा- (1)"स्वर उन वर्णो को कहते हैं जिनका उच्चारण बिना अवरोध अथवा विघ्नबाधा से होता है।" (वासुदेवनंदन प्रसाद)

(2)"स्वर वह ध्वनि है,जिनके उच्चारण करते समय हवा अबाधगति से मुखविवर से निकल जाती हो।" (भोलानाथ तिवारी)

हिंदी स्वरों का वर्गीकरण-

(1)मात्रा के आधार पर -

(क) ह्रस्व स्वर

(ख) दीर्घ स्वर

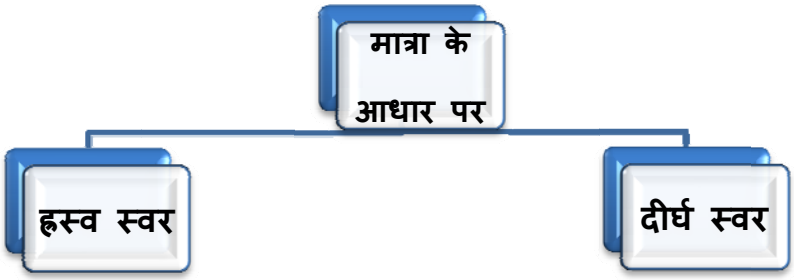

(क) ह्रस्व स्वर-जिनकाउच्चारणसामान्यसमयमेंहोताहैउन्हेंह्रस्वस्वरकहते हैं।

जैसे- अ, इ, उ, ऋ आदि।

(ख) दीर्धस्वर-जिनकाउच्चारणह्रस्वस्वरकी अपेक्षा दोगुना समय में हो उसे दीर्ध स्वर कहते हैं।

जैसे-आ,ई,ऊ,ए,ऐ,ओ,औआदि।

(2)जीभव मुखविवर की स्थिति के आधार पर-

(क)जीभ का कौन सा भाग उठता है-

(i)अग्र (ii)मध्य (iii) पश्च

(ख)मुखविवर कितना खुला रहता है-

(i)संवृत (ii)अर्धसंवृत (iii)अर्धविवृत(iv)विवृत

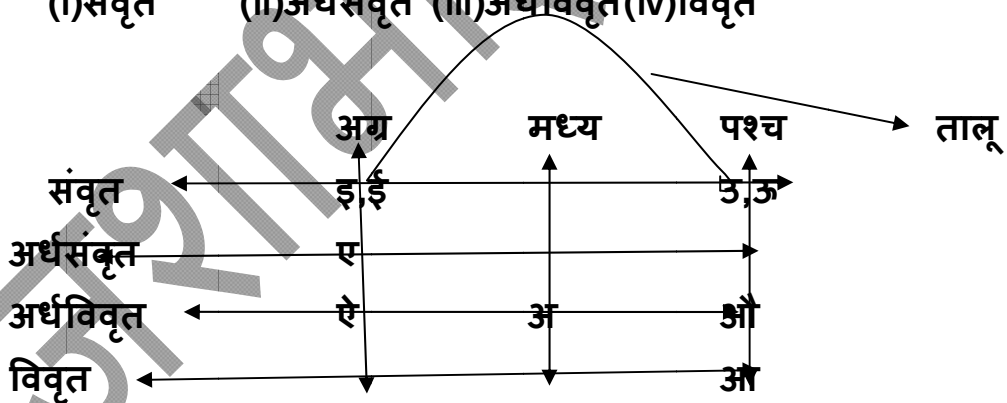

(3)उच्चारणकरतेसमयहवामुख(मौखिक),नाक(अनुनासिक) के रास्ते निकलने पर-

(क) मौखिक- अ.आ,इ,ई,उ,ऊ,ए.ऐ,ओ,औ,ऑ

(ख)अनुनासिक- अँ,आँ,इँ,ईँ,उँ,ऊँ,एँ,ऐँ,ओँ,औँ,ऑँ

(4)ओष्ठ की स्थिति के आधार पर-कुछ स्वरों के उच्चारण में होठ गुलाई(वृत्तकार)या फैलेहुए(अवृत्ताकार)रहते हैं,उसी आधार पर दो प्रकार-

(क) वृत्तमुखी- उ,ऊ,ओ,औ

(ख) अवृत्तमुखी- अ,आ,इ,ई,ए,ऐ,

हिंदीं व्यंजन वर्ण-

परिभाषा- **(1)"स्वर की सहायता से बोला जाए उसे व्यंजन कहते हैं"।**

(वासुदेवनंदन प्रसाद)

(2) "व्यंजन वह ध्वनि हैजिसके उच्चारण में हवा अबाधगति से मुखविवर नहींनिकल पाती है"।

(भोलानाथ तिवारी)

हिंदी व्यंजन के प्रकार - व्यंजन के मुख्य तीन प्रकार हैं।

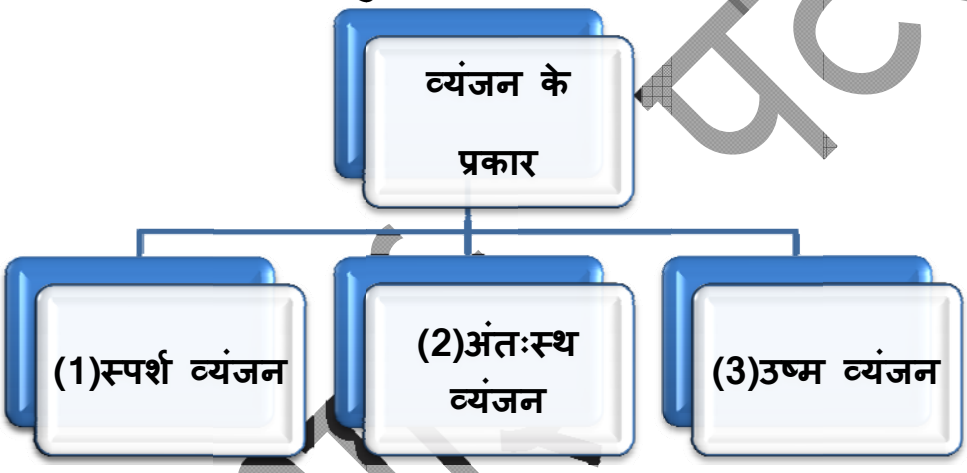

(1)स्पर्श व्यंजन

(2)अंतःस्थ व्यंजन

(3)उष्म व्यंजन

(1)स्पर्श व्यंजन-जीभ,तालु,मुर्धा,दंत,ओठ,कंठ आदि किसी न किसी भाग के स्पर्श सेउच्चरितव्यंजन को स्पर्श व्यंजन कहते हैं।

<u>जिनके मुख्य पाँच वर्ग हैं</u>-

क वर्ग	**क**	**ख**	**ग**	**ध**	**ङ**	**(कंठ)**
च वर्ग	**च**	**छ**	**ज**	**झ**	**ञ**	**(तालु)**
ट वर्ग	**ट**	**ठ**	**ड**	**ढ**	**ण**	**(मुर्धा)**
त वर्ग	**त**	**थ**	**द**	**ध**	**न**	**(दन्त)**
प वर्ग	**प**	**फ**	**ब**	**भ**	**म**	**(होठ)**

(2)अंतःस्थ व्यंजन- येजीभ,तालु,मुर्धा,दंत,ओठ,कंठ को परस्पर सटाने से होता है,किंतु पूर्ण स्पर्श नहीं होता है।ये चार हैं-य,र,ल,व।

(3)उष्म व्यंजन-उच्चारण से एक प्रकार की रगड़ या घर्षण से उत्पन्न वायु से होता है। ये चार हैं-श,ष,स,ह।

*प्राणत्व के आघार पर- प्राणत्व के आघार पर व्यंजन के दो प्रकार है।-

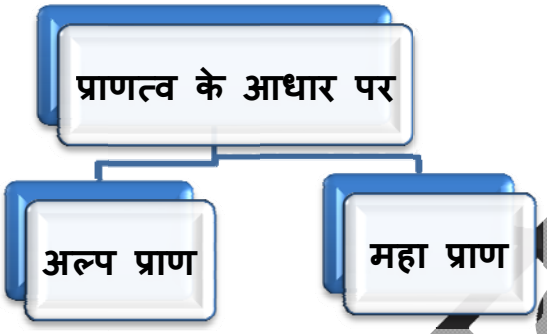

(क)अल्पप्राण-

प्राण का अर्थ है वायु और अल्प का अर्थ है थोडा अर्थात् जिनके उच्चारण में थोडा परिश्रम करना पड़ता है।स्पर्श व्यंजन के प्रत्येक वर्ग का पहला ,तीसरा और पांचवाँ वर्ण अल्पप्राण है।अंतःस्थ व्यंजन-य,र,ल,व भी इसी में आते हैं।

(ख) महाप्राण-

महा का अर्थ ज्यादा। अर्थात् जिनके उच्चारण में अधिक परिश्रम करना पडता है।स्पर्श व्यंजन के प्रत्येक वर्ग का दूसरा , और चौथा वर्ण महाप्राण है। अग्रेंजी में हवा के लिए 'H' प्रयोग होता है।इसी कारण इसी वर्ग की प्रत्येक ध्वनि के लिए अंग्रेजी में'H'का प्रयोग होता है।

क वर्ग	क	ख	ग	ध	ङ	(कंठ)
च वर्ग	च	छ	ज	झ	ञ	(तालु)
ट वर्ग	ट	ठ	ड	ढ	ण	(मुर्धा)
त वर्ग	त	थ	द	ध	न	(दंन्त)
प वर्ग	प	फ	ब	भ	म	(होठ)
	अल्पप्राण			महाप्राण		

https://www.youtube.com/watch?v=F31vk7tUQRg

https://epustakalay.com/

संज्ञा

संज्ञाकीपरिभाषा-

(1)वासुदेवनंदनप्रसाद-

"संज्ञाउसविकारीशब्दकोकहतेहैंजिससेकिसीविशेषवस्तुअथवाव्यक्तिकेनामकाबोधहो।"

(आधुनिकहिंदीव्याकरणऔररचना)

(2)कामताप्रसादगुरु- "वस्तुकानामसूचितकरनेवालेशब्दकोव्याकरणमेंसंज्ञाकहतेहैं।"

(संक्षिप्तहिंदीव्याकरण)

(3)डॉ.उमेशचन्द्रशुक्ल- "किसीवस्तु,व्यक्ति, प्राणीयापदार्थअथवाइसकेगुणाक्रियादिकधर्मोकोसूचितकरनेवालेशब्दोंकोसंज्ञाकहतेहैं।" (हिंदीव्याकरण)

संज्ञाकेप्रकार-हिंदीव्याकरणमेंसंज्ञाकेपॉचप्रकारहैं-

(1)व्यक्तिवाचकसंज्ञा (2)जातिवाचकसंज्ञा

(3)समूहवाचकसंज्ञा (4)द्रव्यवाचकसंज्ञा

(5)भाववाचकसंज्ञा

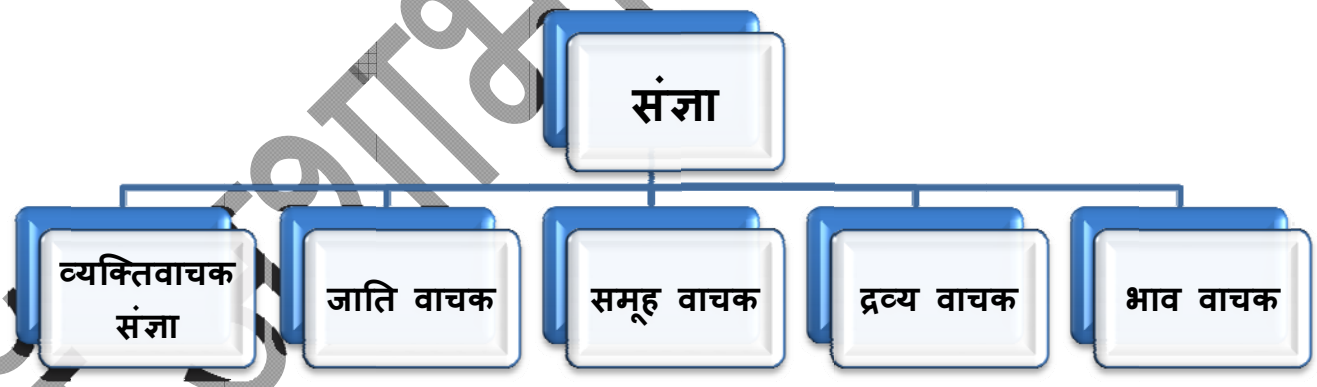

(1)व्यक्तिवाचकसंज्ञा-

जिसशब्दसेकिसीएकवस्तुयाव्यक्तिकेनामकाबोधहोउसेव्यक्तिवाचकसंज्ञाकहतेहैं।

जैसे-कृष्ण, हिमालय, काशी

<u>दीमशित्स</u>केअनुसारसंज्ञाकीसूची

(1)व्यक्तियोंकेनाम- कुंदन,किशन,राधा,हिमांक....आदि।

(2)दिशाओंकेनाम- उत्तर.दक्षिण,पूर्व....आदि।

(3)दिनों,महीनोंकेनाम- सोमवार, जनवरी...आदि।

(4)नदियोंकेनाम- गंगा, सिंधु...आदि।

(5)नगरों,सड़कोंकेनाम- काशी, सरदारपटेलमार्ग...आदि।

(2)जातिवाचक संज्ञा- जिस शब्द से किसी वस्तु या व्यक्ति की जाति के नाम का बोधहो उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।

जैसे-नदी कहने से सभी प्रकार की नदियों का बोध होता है,किसी एक नदी का नहीं।

निम्नलिखित उदाहरण-

(1)पदों,व्यवसायों, संबंधियों के नाम- प्राध्यापक, जुलाहा,भाई-बहन आदि।

(2)पशु-पक्षियों के नाम- घोड़ा,मयूर, चातकआदि।

(3)प्राकृतिक तत्त्वों के नाम- बिजली, वर्षा, तूफान आदि।

(4) वस्तुओं के नाम- कलम,किताब,घड़ीआदि।

(3)समूहवाचक संज्ञा- जिस शब्द से किसी वस्तु या व्यक्ति के समूह के नाम का बोध होउसे समूहवाचक संज्ञा कहते हैं।

जैसे-(1)व्यक्तियों का समूह- सभा, दल,भीड़,संघ, आदि।

(2)वस्तुओं का समूह- गुच्छा, लताकुंज, आदि।

(4)द्रव्यवाचक संज्ञा- जिस शब्द से किसी नाप-तौलवाली अथवा ढेर राशी के नाम का बोध हो उसे द्रव्यवाचकसंज्ञा कहते हैं।

जैसे-सोना,पानी,बाजरा।

(5)भाववाचक संज्ञा- जिस संज्ञा से व्यक्ति या वस्तु के गुण,धर्म,यादशा अथवा व्यापार आदि के नाम का बोध होता हैउसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं।

(1)संज्ञाओं से- जशु से-जशुगीरी, दादा से-दादागीरी,आदि।

(2)क्रिया से- दौड़ना-दौड़, सजाना-सजावट, आदि।

(3)अव्यय से- दूर-दूरी।

(4)सर्वनाम से- अपना- अपनापन।

https://www.youtube.com/watch?v=sdDgMFrIfUo

सर्वनाम

https://www.youtube.com/watch?v=8VooQtXUZzw

परिभाषा-

(1)वासुदवनंदनप्रसाद- **"संज्ञाओंकेबदलेजोशब्दआतेहैंउन्हेंसर्वनामकहतेहैं।"**
(आ.हिंदीव्या. औररचना)

(2)पं.कामताप्रसादगुरु -

"सर्वनामउसविकारीशब्दकोकहतेहैंजोपूर्वापरसंबंधसे किसीभीसंज्ञाकेबदलेआताहै।"
(संक्षिप्तहिंदीव्याकरण)

(3)डॉ.उमेशचन्द्रशुक्ल- **"संज्ञाकेस्थानपरप्रयुक्तहोनेवालेविकारीशब्दोंको सर्वनामकहतेहैं।"** **(हिंदीव्याकरण)**

हिंदीमेंकुलसर्वनाम11हैं।

जैसे- मैं.तुम,यह, वह,आप,जो-सो, कोई,कुछ,कौन,क्या इत्यादि।

सर्वनामकेप्रकार-प्रयोगकेआधारपरसर्वनामके 6 भेदहैं-

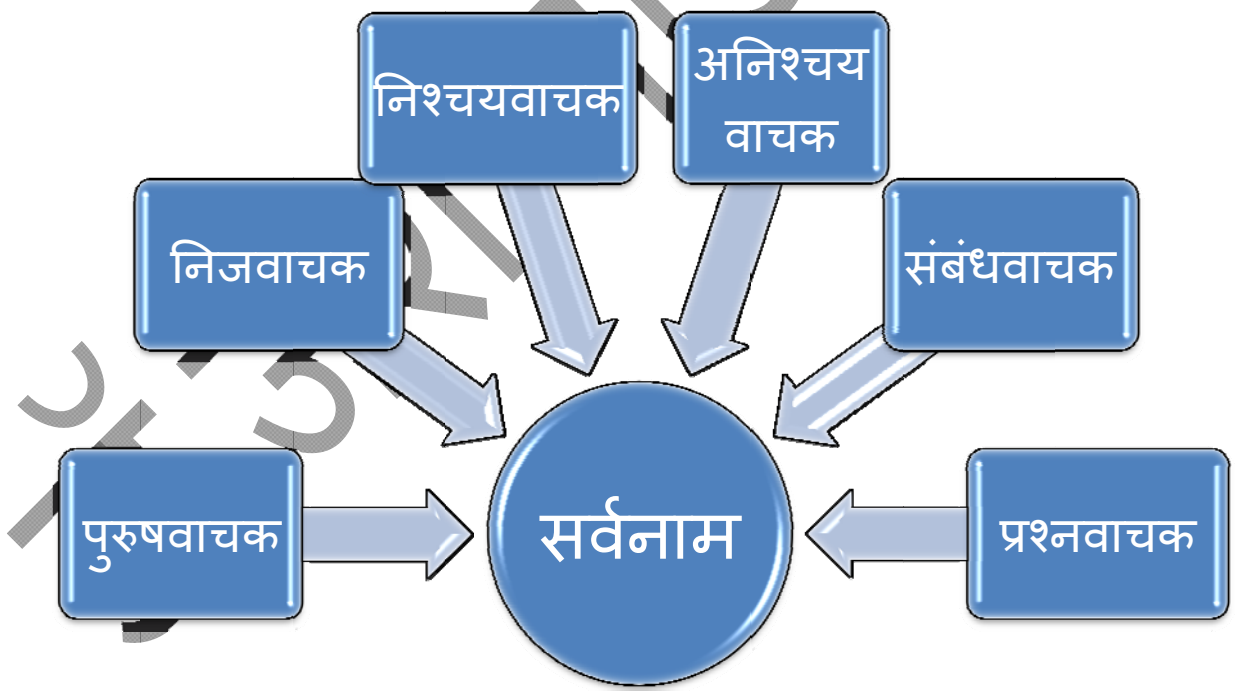

(1)पुरुषवाचकसर्वनाम-(मैं,तू,आप, यह,वह)

पुरुषयास्त्रीकेनामकेबदलेजोसर्वनामआतेहैं।हिंदीमेंकुल तीनप्रकारकेपुरुषवाचकसर्वनामहैं-(1)उत्तम पुरुष(2)मध्यम पुरुष(3)अन्य पुरुष।

(1)उत्तमपुरुष-वक्ताअथवालेखकअपनेलिएजिनसर्वनामकाप्रयोगकरे वह सर्वनाम उत्तम पुरुष सर्वनाम कहा जाता है। जैसे- मैं,हम।

(2)मध्यमपुरुष-वक्ताअथवालेखकश्रोताकेलिएअपनेलिएजिनसर्वनामकाप्रयोगकरे वह सर्वनाम मध्यम पुरुष सर्वनाम कहा जाता है।जैसे- तू,(तुम),आप।

(3)अन्यपुरुष-वक्ताअथवालेखकअन्यकेलिएजिनसर्वनामकाप्रयोगकरे वह सर्वनाम अन्य पुरुष सर्वनाम कहा जाता है।जैसे- यह कुन्दन है। वह हिमांक है।

पासकीवक्ति के लिए-यहऔरदूरकीवक्ति के लिए-वहका प्रयोग होता है।

(2) निजवाचकसर्वनाम- (आप)

"जोसर्वनामकिसीनिजसंज्ञाकेउद्देश्यकोस्पटकरेवहसर्वनामनिजवाचकसर्वनामहै।"उसकासार्वनामिकरूप'आप'है।जिसकातीनरूपोंमेंप्रयोगहोताहै।-

(i)दूसरेव्यक्तिकेनिराकरणकेलिए-

उदा.-वहऔरोंकोनहींअपनेआपकोसुधाररहाहै।

(ii)सर्वसाधारणअर्थकेलिए-

उदा.-आपभलातोजगभला।

(iii)अवधारणा(निश्चय)केअर्थकेलिए-

उदा.-मैंयहकामआपहीकरलूंगा। अथवाघासआपहीउगतीहै।

(3)निश्चयवाचकसर्वनाम- (यह,वह)

"जिससर्वनामसेवक्ताकेपासयादूरकीकिसीवस्तुकेनिश्चयकाबोधहो,उसे निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।" उसके दो रूप हैं-

(1)पासकीवस्तुकेलिए- यहसर्वनाम उदा. यहमेरीपुस्तकहै।

(2)दूरकीवस्तुकेलिए- वहसर्वनाम उदा. वहतेरीपुस्तकहै।

(4)अनिश्चयवाचकसर्वनाम- (कोई,कुछ)

"जिससर्वनामसेकिसीनिश्चितवस्तुकाबोधनहो,अनिश्चयवाचकसर्वनामकहतेहैं।" जैसे-उदा.-तेरेमनमेंकुछतोहै। कोईमिलगया।

(5) सम्बन्धवाचकसर्वनाम- (जो-सो)

"जिससर्वनामसेवाक्यमेंकिसीदूसरेसर्वनामसेसंबंधस्थापितकियाजायउसेसम्बन्धवाचकसर्वनामकहतेहैं।"उसकेदोसार्वनामिकरूपहै-जो-सो।

उदा.(1)जोडरगयासोमरगया।(2)जोचाहोसोलेलो।,

(6)प्रश्नवाचकसर्वनाम- (कौन,क्या)

"प्रश्नकरनेकेलिएजिनसर्वनामकाप्रयोगहोताहैउन्हेंप्रश्नवाचकसर्वनामकहतेहैं।"उसकेदोसार्वनामिकरूपहै-कौन,क्या।

जैसे-उदा.कौनहैजोमेरेदिलमेंसमायाजाताहै? क्याखूबलगतीहो?

(1)कौनकाप्रयोगचेतनजीवोंकेलिएहोताहै।

(2)क्याकाप्रयोगजड़जीवोंकेलिएहोताहै।

युनिट-2 (विशेषण,लिंग और वचन,क्रिया)

विशेषण-

https://www.youtube.com/watch?v=mfOX_XLzRcI

परिभाषा-

(1)वासुदेवनंदनप्रसाद- "जोसंज्ञाया सर्वनामकीविशेषताबताएँउसेविशेषणकहतेहैं।' (आ.हिंदीव्या. औररचना)

(2)कामताप्रसादगुरु- "संज्ञाकेअर्थमेंविशेषताबतानेवालेशब्दविशेषणकहलातेहैं।" (संक्षिप्तहिंदीव्याकरण)

(3)उमेशचंन्द्रशुक्ल- "संज्ञाकागुणबताकरउसकीव्याप्तिमर्यादितकरनेवाले शब्दकोविशेषणकहतेहैं।" (हिंदीव्याकरण)

जैसे- कालाकृष्णमेंकालाशब्द कृष्ण की संज्ञा की व्याप्तिमर्यादितकरताहै।

*रचना की दृष्टि से विशेषण के मूलदोप्रकारहै-

(1)विकारीविशेषण (2)अविकारीविशेषण-

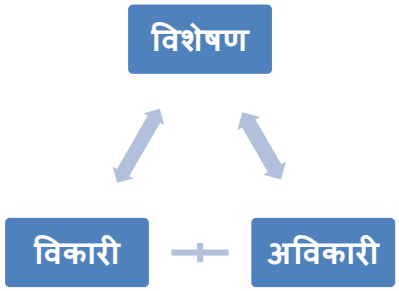

(1) विकारीविशेषण-

लिंग,वचन,पुरुषइत्यादिकेकारणजिनविशेषणमेंपरिवर्तनहोताहैवहसारेविशेषणविकारीहै।

जैसे-कालाघोड़ा, कालीघोड़ी(लिंग)

(2) अविकारीविशेषणलिंग,वचन,पुरुषइत्यादिकेकारणजिनविशेषणमेंपरिवर्तननहींहोताहैवहसारे विशेषणअविकारीहै।

जैसे-सुन्दरलड़की,सुन्दरलड़का(लिंग)

- प्रयोगकीदृष्टिसेविशेषण के चारप्रकारहैं-

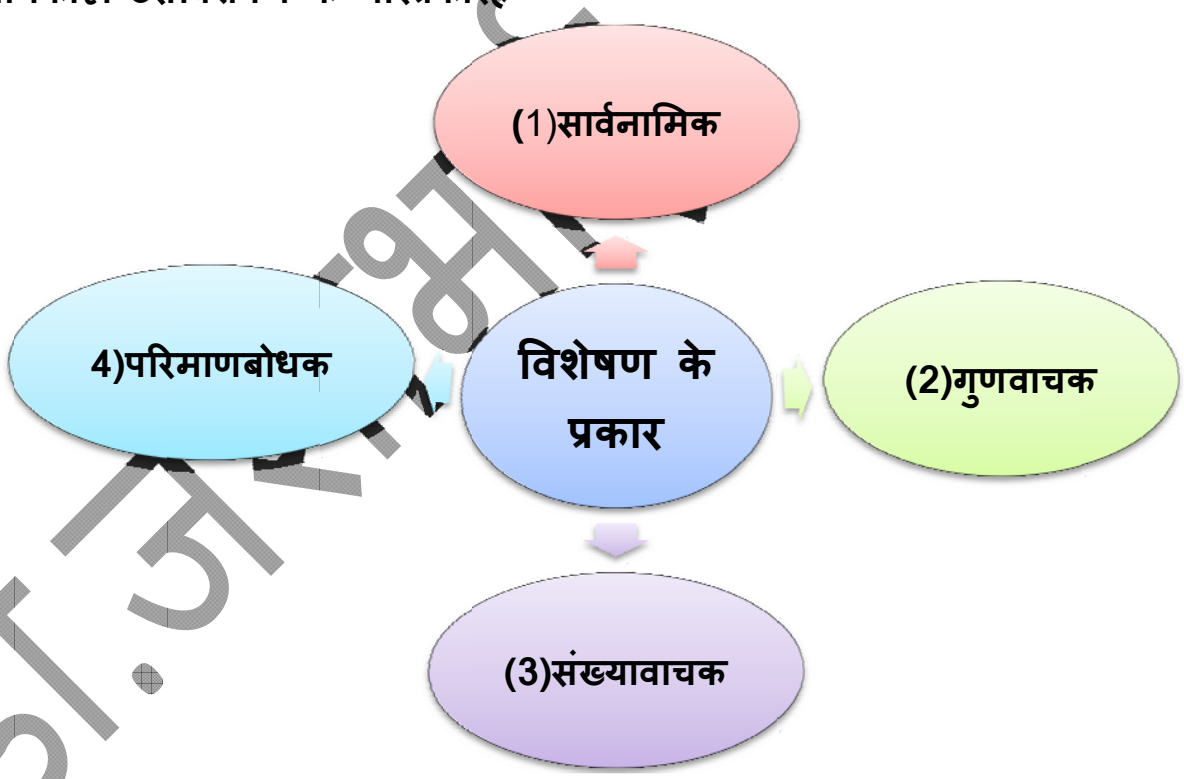

(1)सार्वनामिकविशेषण-

जोसर्वनामशब्दकीभाँतिकिसीसंज्ञाकीविशेषताबताएउसेसार्वनामिकविशेषणकहतेहैं।

जैसे-वहआदमीकुशलहै। अथवा कौनव्यक्तिजायेगा?पुरुषवाचकऔरनिजवाचकसर्वनाम मैं,तू,आपकोछोड़करशेषसभीसर्वनामसंज्ञाकेसाथप्रयुक्तहोने परसार्वनामिकविशेषणबनजातेहैं। जैसे-

(1)निश्चयवाचक- यहपेन, वहपेन,आदि।

(2)अनिश्चयवाचक- कोईपेन, कुछलोग,आदि।

(3)प्रश्नवाचक- कौनव्यक्ति?आदि।

(4)संबंधवाचक- जैसीकरनीवैसीभरनीआदि।

सार्वनामिकविशेषणदोप्रकारकेहोतेहैं—(क)मूल सा.वि. (ख)यौगिक सा. वि.

(क)मूलसार्वनामिकविशेषण-

जोसर्वनामबिनाकिसीरूपांतरणकेविशेषणकेरूपमें प्रयुक्तहोताहै, मूलसार्वनामिकविशेषणकहलाताहै।जैसे-वहआदमीकुशलहै।

(ख)यौगिकसार्वनामिकविशेषण-

जोसर्वनाममूलसर्वनाममेंप्रत्ययआदिजुड़जानेसेविशेषणकेरूपमेंप्रयुक्तहोताहै,यौगिकसार्वनामिकविशेषणकहलाताहै।जैसे-ऐसाआदमीनहींमिलेगा। अथवा जैसीकरनीवैसीभरनीआदि।

(3) गुणवाचक विशेषण-

जिस शब्द से संज्ञा यासर्वनाम के गुण,रूप,रंग आदि का बोध हो, उसेगुणवाचक(कोई भी विशेषता) विशषणकहते हैं।

जैसे-बाग़ में सुन्दर फुल है।अच्छे बच्चे बड़ो का आदर करते हैं।इसमें 'सुन्दर' तथा 'अच्छे' गुण वाचक विशेषण हैं।इसके मुख्य रूप निम्नलिखित हैं-

(1)कालवाचक- नया पोशाक,पुराना घर. आदि।

(2)स्थानवाचक- बनारसी साड़ी, नरोड़ा वासी, आदि।

(3)आकारवाचक- गोल मैदान, लंबा आदमी, आदि।

(4)दशावाचक- बूढ़ा आदमी,बीमार व्यक्ति, आदि।

(5)रंगवाचक- काला कृष्ण,गोरी राधा, आदि।

(6)गुणवाचक- सुंदर फूल,भला आदमी आदि।

(3)संख्यावाचक विशेषण-

जिस विशेषण से संज्ञा या सर्वनाम की संख्या का बोध होउसे संख्यावाचक विशेषण कहते हैं।

इसके मुख्य दो भेद हैं-

(क)निश्चित संख्यावाचक विशेषण-मुख्य उपभेद-

(i)पूर्णांकबोधक- एक,दो, तीन,चार, आदि।

(ii)क्रमवाचक- पहला,दूसरा,तीसरा, आदि।

(iii)आवृत्तिवाचक- दुगुना,चौगुना,दसगुना, आदि।

(iv)समूहवाचक- दोनों. चारों, आदि।

(ख)अनिश्चत संख्यावाचक विशेषण- मुख्य उपभेद-

(i)अपूर्णंकबोधक- आधा, पोना, सवा आदि।

(ii)समूहवाचक- सभी,सारे आदि।

(4) परिमाणबोधक विशेषण-

जिस विशेषण से किसी वस्तु की नाप-तौल का बोध हो उसे परिमाणबोधक विशेषण कहते हैं। जैसे- दूध,पानी, सोना,चांदीआदि।

इसके मुख्य दो भेद हैं-

(क)निश्चित परिमाणबोधक विशेषण-एक मीटर कपड़ा,दो सेर दूध आदि ।

(ख)अनिश्चित परिमाणबोधक विशेषण-थोड़ा पानी, बहुत धन आदि।

विशेष- अधिकांश विशेषण संख्यावाचक और परिमाणबोधक दोनों होते हैं।वे एक-वचन संज्ञा के साथ आकर परिमाण-बोधक हो जाते हैं और बहुवचन संज्ञा के साथसंख्यावाचक बन जाते हैं।जैसे--

परिमाण-बोधक विशेषण	संख्यावाचक विशेषण
1.हमारे घर में बहुत घी है।	उस कक्षा में बहुत विद्यार्थी हैं।
2.सब दूध फट गया।	सब पेड़ हरेभरे हैं।
3.आधा धन बाँट दो।	आधे सदस्य अनुपस्थित हैं।

डॉ.जगभाई पटेल

https://www.youtube.com/watch?v=UF3S1IvOK4w

लिंग और वचन-

संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण के जिस रूप से हमें संख्या का पता चले उसे वचन कहते हैं। इसे ऐसे भी समझ सकते है संज्ञा के जिस रूप से किसी व्यक्ति वस्तु के एक से अधिक होने का या एक होने का पता चलता है उसे वचन कहते हैं।

वचन की परिभाषा- "शब्दों के संख्यावाचक रुप को वचनकहते हैं।"

"संज्ञा के जिस रूप से किसी व्यक्ति वस्तु स्थान के एक या एक से अधिक होने का बोध हो उसे वचनकहते हैं।"

उदाहरण- लड़का भागता है।लड़के भागते हैं।

ऊपर दिए गए दोनों उदाहरण में थोड़ा सा परिवर्तन है जहां लड़का एक होने बोध करा रहा है, वहीं लड़के कई होने का बोध करा रहे हैं।इस आधार पर वचन के दो प्रकार होते हैं।

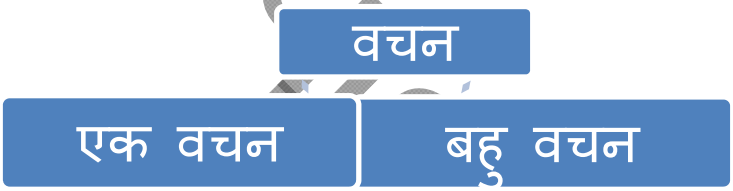

वचन के प्रकार- 1. एकवचन2. बहुवचन

1. एकवचन

संज्ञा के जिस रूप से किसी व्यक्ति, वस्तु, प्राणी, पदार्थ आदि के एक होने का बोध हो या पता चलता है उसे एकवचन कहते हैं।

जैसे- लड़का, गाय, सिपाही घोड़ा, बच्चा, कपड़ा, माला, पुस्तक, स्त्री, टोपी, मोर आदि।

2. बहुवचन

संज्ञा के जिस रुप से किसी व्यक्ति, वस्तु, प्राणी, पदार्थ आदि के एक से अधिक होने का बोध होता है या पता चलता है उसे बहुवचन कहते हैं।

जैसे-लड़के, बच्चे कपड़े पुस्तकें स्त्रियां टोपिया, गाड़ियां, ठेले, नदियां आदि।

हिन्दी में एकवचन के स्थान पर बहुवचन का प्रयोग

(क) आदर के लिए भी बहुवचन का प्रयोग होता है। जैसे-

(1) भीष्म पितामह तो ब्रह्मचारी थे।

(2) गुरुजी आज नहीं आये।

(3) शिवाजी सच्चे वीर थे।

(ख) बड़प्पन दर्शाने के लिए कुछ लोग वह के स्थान पर वे और मैं के स्थान हम का प्रयोग करते हैं जैसे-

(1) मालिक ने कर्मचारी से कहा, हम मीटिंग में जा रहे हैं।

(2) आज गुरुजी आए तो वे प्रसन्न दिखाई दे रहे थे।

(ग) केश, रोम, अश्रु, प्राण, दर्शन, लोग, दर्शक, समाचार, दाम, होश, भाग्य आदि ऐसे शब्द हैं जिनका प्रयोग बहुधा बहुवचन में ही होता है। जैसे-

(1) तुम्हारे केश बड़े सुन्दर हैं।

(2) लोग कहते हैं।

बहुवचन के स्थान पर एकवचन का प्रयोग

(क) तू एकवचन है जिसका बहुवचन है तुम किन्तु सभ्य लोग आजकल लोक-व्यवहार में एकवचन के लिए तुम का ही प्रयोग करते हैं जैसे-

(1) मित्र, तुम कब आए।

(2) क्या तुमने खाना खा लिया।

(ख) वर्ग, वृंद, दल, गण, जाति आदि शब्द अनेकता को प्रकट करने वाले हैं, किन्तु इनका व्यवहार एकवचन के समान होता है। जैसे-

(1) सैनिक दल शत्रु का दमन कर रहा है।

(2) स्त्री जाति संघर्ष कर रही है।

(ग) जातिवाचक शब्दों का प्रयोग एकवचन में किया जा सकता है। जैसे-

(1) सोना बहुमूल्य वस्तु है।

(2) मुंबई का आम स्वादिष्ट होता है।

नोट- कुछ शब्द हमेशा एकवचन ही होते है जैसे _ जनता , सामग्री, प्रजा, माल सोना सामान आग, हवा, वर्षा आदि

- एकवचन से बहुवचन बनाने के नियम

1.आकारांत पुल्लिंग शब्दों को एकवचन से बहुवचन बनाने के लिए शब्दों में “आ” के स्थान पर “ए” का प्रयोग किया जाता है ।

एकवचन	बहुवचन
जूता	जूते

कपड़ा कपड़े

2. आकारांत स्त्रीलिंग शब्दों को एकवचन से बहुवचन बनाने के लिए शब्दों में "अ " के स्थान पर "ऐ" का प्रयोग किया जाता है ।

एकवचन	बहुवचन
बात	बातें
रात	रातें
आँख	आँखें

3. आकारांत स्त्रीलिंग शब्दों को एकवचन से बहुवचन बनाने के लिए शब्दों में "आ " के स्थान पर "एँ" का प्रयोग किया जाता है ।

एकवचन	बहुवचन
कविता	कविताएँ
लता	लताएँ
कथा	कथाएँ

4. एकवचन और बहुवचन दोनों में शब्द एक समान हो ।

एकवचन	बहुवचन
राजा	राजा
पिता	पिता
बाज़ार	बाज़ार

5. जब स्त्रीलिंग शब्दों में "य" के बदले "याँ" आए

एकवचन	बहुवचन
गुडिया	गुड़ियाँ
चुहिया	चुहियाँ

6. इकारांत स्त्रिलंग शब्दों में "इ" या "ई" के स्थान पर "इयाँ " आए

एकवचन	बहुवचन
नीति	नीतियाँ
नारी	नारियाँ
सखी	सखियाँ

7. जब शब्दों का 2 बार प्रयोग हो

एकवचन	बहुवचन
भाई	भाई -भाई
घर	घर-घर
शहर	शहर -शहर

8. संज्ञा के पुल्लिंग और स्त्रीलिंग शब्दों में गण,वर्ग, ,जन ,दल,लोग आदि शब्द जोड़कर बहुवचन बनाते है ।

एकवचन	बहुवचन
अध्यापक	अध्यापकगण
विद्यार्थी	विद्यार्थीगण

लिंग की परिभाषा: भेद, उदाहरण और नियम

लिंग की परिभाषा:-

"संज्ञा के जिस रूप से किसी व्यक्ति या वस्तु के स्त्री या पुरुष जाति का होने का बोध होता हो उसे लिंग (Ling) कहते हैं।"

लिंग का अर्थ चिह्न या पहचान होता है। हिंदी भाषा की मूल भाषा, संस्कृत भाषामें तीन प्रकार के लिंग (Ling) होते हैं। परन्तु हिंदी भाषा में तीन प्रकार के लिंग की व्यवस्था न होकरदो प्रकार के लिंग की व्यवस्था है।

लिंग के भेद या प्रकार- हिंदी में लिंग के दो प्रकार होते हैं:- पुल्लिंग और स्त्रीलिंग।

पुल्लिंग की परिभाषा:- 'संज्ञा के जिस रूप से किसी व्यक्ति या वस्तु की पुरुष जाति होने का बोध होता हो उसे पुल्लिंग (Pulling) कहते हैं।'

जैसे:- गोविन्द, शहर, गाँव, गिलास, अध्यापक, काला, बकरा, ऊँट, शंकर, विजय, घर,लड़कादादा, चाचा इत्यादि।

स्त्रीलिंग की परिभाषा:- 'संज्ञा के जिस रूप से किसी व्यक्ति या वस्तु की स्त्री जाति होने का बोध होता हो उसे स्त्रीलिंग (Striling) कहते हैं।'

जैसे:- गीता, गाय, कार, वीणा, अध्यापिका, काली, बकरी, भैंस, सीता, गीता, सड़क इत्यादि।

लिंग की पहचान -

शब्दों के लिंग की पहचान शब्दों के व्यवहार से होती है। हिंदी के अनेक शब्द सदैव पुल्लिंग ही रहते हैं तो कुछ शब्द सदैव स्त्रीलिंग ही रहते है, जबकि बहुत से ऐसे शब्द भी होते हैं जिनका रूप पुल्लिंग से स्त्रीलिंग में बदला जा सकता है।

पुल्लिंग शब्दों की पहचान

पर्वतों के नाम, देशों के नाम, अनाज़ों के नाम, हिंदी महीनों के नाम, दिनों के नाम, जलस्थलोंके नाम, विभागों के नाम, ग्रह-नक्षत्रों के नाम, पेड़ों के नाम इत्यादि पुल्लिंग होते हैं, कुछ अपवादों को छोड़ कर।

पर्वतों के नाम:- हिमालय, विंध्याचल, अरावली, कैलाश, आल्पस।

महीनों के नाम:- अंग्रेज़ी एवं भारतीय महीनों के नाम।

वारों के नाम:- सोमवार, मंगलवार, शनिवार, रविवार, बुधवार, गुरूवार, शुक्रवार।

देशों के नाम:- भारत, अमेरिका, चीन, रूस, फ्रांस, इंडोनेशिया।अपवाद-श्रीलंका(स्त्रीलिंग)

ग्रहों के नाम:- सूर्य, चंद्रमा, राहु, केतु, अरुण, वरुण, यम। अपवाद - पृथ्वी (स्त्रीलिंग)

धातुओं के नाम:- सोना, ताम्बा, पीतल, लोहा। अपवाद - चाँदी (स्त्रीलिंग)

वृक्षों के नाम:- नीम, बरगद, बबूल, आम, पीपल, अशोक। अपवाद - इमली (स्त्रीलिंग)

अनाजों के नाम:- चावल, गेहूँ, बाजरा, जौ। अपवाद - ज्वार (स्त्रीलिंग)

द्रव पदार्थों के नाम:- तेल, घी, दूध, शर्बत, मक्खन, पानी। अपवाद - लस्सी, चाय (स्त्रीलिंग)

स्त्रीलिंग शब्दों की पहचान

तिथियों के नाम, भाषाओँ के नाम, लिपियों के नाम, बोलियों के नाम, नदियों के नाम, नक्षत्रों के नाम, देवियों के नाम, महिलाओं के नाम, लताओं के नाम स्त्रीलिंग होते हैं।

तिथियों के नाम - प्रथमा, द्वितीय, एकादशी, अमावस्या, पूर्णिमा इत्यादि।

भाषाओँ के नाम - हिंदी, अंग्रेज़ी, उर्दू इत्यादि।

लिपियों के नाम - देवनागिरी, रोमन, अरबी, फ़ारसी इत्यादि।

बोलियों के नाम - ब्रज, राजस्थानी, हरयाणवी, जयपुरी इत्यादि।

नदियों के नाम - गंगा, व्यास, सतलज इत्यादि।

नक्षत्रों के नाम - रोहिणी, अश्विनी, भरणी इत्यादि।

देवियों के नाम - दुर्गा, काली, उमा इत्यादि।

महिलाओं के नाम - कमला, विमला, ममता, राधा इत्यादि।

लताओं के नाम - अमर, बेल, मालती इत्यादि।

हिंदी के जिन शब्दों के अंत में आ या ई की मात्रा आती है, उनमें से अधिकतर शब्द स्त्रीलिंग होते हैं।जैसे:-रमा, सीता, गीता, अनुजा, कली, नदी, रोटी, टोपी, सब्जी, राधा, गली, पीली, काली, चमकीली इत्यादि।

हिंदी के बहुत से शब्दों में ता, आस, आहट, आवट, आई, ई इत्यादि प्रत्यय जोड़ देने पर बनने वाले लगभग शब्द स्त्रीलिंग होते हैं।जैसे:-ता प्रत्यय:- मनुष्यता, पशुता, कविता, गुरुता, सुन्दरता, मधुरता, विवशता, लघुता इत्यादि।

आस प्रत्यय:- प्यास, मिठास, खटास आदि।

आहट प्रत्यय:- घबराहट, चिल्लाहट, सजावट, रुकावट, मिलावट, चिकनाहट, गुर्राहट इत्यादि।

आई प्रत्यय:- लड़ाई, भलाई, बुराई, अच्छाई, ऊँचाई, जुदाई, सफ़ाई, चौड़ाई इत्यादि।

ई प्रत्यय:- गर्मी, दूरी, हँसी, बोली, धमकी, बड़ाई, देवी, बेटी, काकी, घोड़ी इत्यादि।

आवट प्रत्यय:- लिखावट, तरावट, थकावट, सजावट, दिखावट, रूकावट इत्यादि।

हिंदी के अनेक प्राणी वाचक शब्दों का प्रयोग सदैव स्त्रीलिंग में ही होता है।जैसे:-सेना, सरकार, पुलिस, संतान, संतति इत्यादि।

- लिंग से सम्बंधित महत्वपूर्ण तथ्य-

हिंदी में ऐसे अनेक पुल्लिंग शब्द होते हैं, जो हिंदी की मूल भाषा संस्कृत भाषा मेंस्त्रीलिंगहोते हैं। जैसे:- तारा, देवता, व्यक्ति आदि।

हिंदी में ऐसे अनेक स्त्रीलिंग शब्द होते हैं, जो हिंदी की मूल भाषा संस्कृत भाषा में पुल्लिंग होते हैं। जैसे:- आत्मा, बूँद आदि।

क्रिया

परिभाषा-

(1)डॉ. वासुदेवनंदन प्रसाद- "जिस शब्द से काम का करना या होना समझ़ा जाए उसे क्रिया कहते हैं।"

(2)कामताप्रसाद गुरु- "किसी वस्तु के विषय में विधान करनेवाले शब्द को क्रिया कहते हैं।

(3)डॉ.उमेशचन्द्र शुक्ल- "उस विकारी शब्द को जो किसी कार्य का करना या होना प्रकट करे, क्रिया कहते हैं।"

क्रिया के प्रकार-

⁎व्युत्पत्ति के आधार पर क्रिया के भेद-(1) मूल क्रिया(रूढ़ क्रिया) (2) यौगिक क्रिया

(1)मूल क्रिया (रूढ़ क्रिया) -मूल धातु से बनी हुई क्रिया को मूल (रूढ़) क्रिया कहते हैं। जैसे-चल् ,वाक्, आदि क्रयायुक्त धातु।

(2)यौगिक क्रिया- जो क्रिया धातु के साथ दूसरे शब्द लगाकर बनाई जाती है अथवा एक से अधिक तत्वों से होती हैउसे यौगिक क्रया कहते हैं।जैसे- चल् से चलाना,चलवाना, चलचलाचल,चल सकना आदि।

⁎प्रयोग की दृष्टि से क्रिया के प्रकार है-

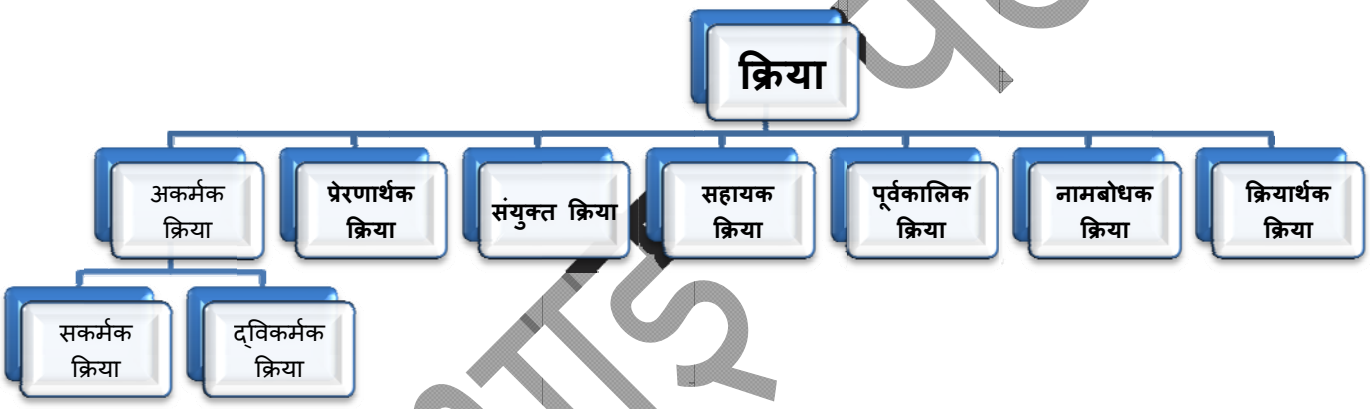

(1)अकर्मक क्रिया- जिन क्रियाओं का व्यापार और फल कर्तापर हो,उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं।जैसे-श्याम लिखता है।अथवा सीता चलती है।

(2)सकर्मक क्रिया-जब क्रिया के व्यापार का फल कर्म पर पडता है तब उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे- रमेश रोटी खाता है। अथवा मंगल बोझ उठाता है।

(2.1)द्विकर्मक- जिस सकर्मक क्रिया का अर्थ स्पष्ट करने के लिएवाक्य में दो कर्म प्रयुक्त होते हैं,उसे द्विकर्मक क्रिया कहते हैं।जैसे-मां अपनी बेटी को कहानी सुनाती है।

(3)प्रेरणार्थक क्रिया-कर्ता स्वयं कार्य न कर किसी दूसरे को कार्य करनेके लिए प्रेरित करे,उसे प्रेरणार्थक क्रियाकहते हैं।जैसे-शिक्षक विद्यार्थी से किताब पढ़वाता है।बहुधा धातुओं से दो-दो प्रेरणार्थक क्रियाएँ बनती हैं,पहलीप्रेरणार्थक क्रिया में ‘आ’ और दूसरी में ‘वाँ’ जुड़ जाता है।

धातु	प्रेरणार्थक	प्रेरणार्थक क्रिया
गिर(ना)	गिराना	गिरवाना
चल(ना)	चलाना	चलवाना
चढ़(ना)	चढ़ाना	चढ़वाना

(4)संयुक्त क्रिया-जो क्रिया किसी दूसरी क्रिया या अन्य शब्द-भेद के योग से बनती है, उसे संयुक्त क्रिया कहते हैं।

जैसे-तुम मेरे घर प्रतिदिन आया करो। अब रोगी चल सकता है।

(5)सहायक क्रिया-दो क्रिया के योग में जो क्रिया मुख्य क्रिया से रूपको पूरा करने में सहायता प्रदान करती है,उसे सहायक क्रिया कहते हैं।

जैसे-मैंने पढ़ा था।जिसमें पढ़ तथा था समय सूचित क्रिया।अर्थ की दृष्टि से सहायक सहायक क्रिया के उपभेद-

1.आरंभबोधक- श्याम खेलने लगा।

2.समाप्तिबोधक- श्याम खा चुका।

3.अवकाशबोधक- श्याम मुश्किल से सोने पाया।

4.अनुमतिबोधक- श्याम को खेलने दो।

5.नित्यताबोधक- श्याम खेलता रहा।

6.इच्छाबोधक- श्याम खेलना चाहता।

7.आवश्यकताबोधक- श्याम को घर जाना होगा।

(6)पूर्वकालिक क्रिया-जब एक क्रिया समाप्त कर तुरंत दूसरीक्रियाशुरू हो तब पहली क्रिया पूर्वकालिक क्रिया कहलाती है।

जैसे-श्याम ने खेलकर स्नान किया।

(7)नामबोधक क्रिया-संज्ञा अथवा विशेषण के साथ क्रियाजोड़ने से जो संयुक्त क्रियी बनती है,उसे नाम बोधक क्रिया कहते हैं।जैसे-

संज्ञा तथा क्रिया से- अखियाँ मिलाना।

विशेषण तथा क्रिया से- खुश करना।

(8)क्रियार्थक क्रिया-जब क्रिया संज्ञा के अर्थ में प्रयोग हो तबवह क्रिया क्रियार्थक क्रिया बनती है।

जैसे-टहलना स्वास्थ के लिए अच्छा है।

युनिट-3(शब्द रचना)

कारक,उपसर्ग,समास

कारक -

कारक की परिभाषा-

(1)कामताप्रसाद गुरू- **"संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उनका संबंध वाक्यके किसी अन्य शब्द के साथ प्रकट होता हैउसेकारक कहते हैं।"**

(2)वासुदेवनंदन प्रसाद- **"संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उनका क्रिया से संबंध सूचित होउसे कारक कहते हैं।"**

(3)डॉ.उमेशचंन्द्र शुक्ल- **"जिसका क्रिया से सीधा संबंध होउसे कारक कहते हैं।"**

विभक्ति- संज्ञा या सर्वनाम का संबंध किसी अन्य शब्द केसाथ प्रकट करने के लिए जो अक्षर या चिह्न लगाया जाता है,उसे विभक्ति कहते हैं।

कारक	विभक्ति
(1)कर्ता	0,ने
(2)कर्म	0,को
(3)करण	से
(4)सम्प्रदान	को,के लिए
(5)अपादान	से
(6)संबंध	का,के,की,रा,रे,री
(7)अधिकरण	में,पर
(8)संबोधन	हे!,अरे!,अजी!

इसप्रकार हिंदी में कुल आठ कारक हैं।विभक्तियों को कारक-चिह्न या परसर्ग भी कहते हैं।

(1)कर्ता कारक- (0,ने)

वाक्य में संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया करनेवाले का बोध होउसे कर्ता कारक कहते हैं।

जैसे- बच्चे दौड़ते हैं। या स्मिता <u>ने</u> पुस्तक पढ़ी।बच्चे,स्मिता क्रिया करते हैं अतःदोनों वाक्य में कारक हैं।

(2)कर्म कारक- (0,को)

जिस वस्तु पर कर्ता का फल पड़े,उसके लिए प्रयुक्त संज्ञा या सर्वनाम को कर्म कारक कहते हैं।

जैसे- मंगल ने स्मिता <u>को</u> बुलाया।यहाँ मंगल कर्ता और उसके बुलाने का फल स्मिता पर पड़ताहै,इसलिए स्मिता कर्म और को विभक्ति का प्रयोग हुआ है।

(3)करण कारक- (से)

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से किसी क्रिया के साधन का बोध होता है, उसे करण कारक कहते हैं।

जैसे-राम ने रावण को बाण <u>से</u> मारा।वाक्य में बाण से मारेजाने का कार्य हुआ,अतःबाण कारक है।प्यास,भूख,जाड़ा,हाथ,कान तथा आँख आदि शब्द जब बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं,तो उनके साथ से विभक्ति नहींलगती।जैसे-मैंने अपनी आँखों सारा दृश्य देखा।

(4)संप्रदान कारक- (को,के लिए)

संज्ञा या सर्वनाम का वहरूप,जिसके लिए क्रिया की जाती है,संप्रदान कारक कहलाता है।

जैसे- राम ने सीता <u>के लिए</u> साड़ी खरीदी। या राम ने सीता <u>को</u> फूल दिया।यहाँ पहले वाक्य में के लिए तथा दूसरे वाक्य में को विभक्ति काप्रयोग हुआ है।

(5)अपादानकारक- (से)

संज्ञाया सर्वनाम का वह रूप,जिससे अलगाव,आरंभ,तुलना आदि का बोध हो,अपादान कारककहलाता है।

जैसे-गंगा नदी हिमालय <u>से</u> निकलती है। (आरंभ),

पेड़ <u>से</u> पत्ता गिरा। (अलगाव),

सीता का स्वभाव गीता <u>से</u> अलग है। (तुलना) आदि।

(6)संम्बन्ध कारक- (का,के,की.रा,रे.री)

संज्ञा या सर्वनाम का वह रूप,जिसका संबंध वाक्य के अन्य शब्द से हो,संबंध कारककहलाता है।

जैसे-राधा ने कृष्ण की बाँसुरी चुरा ली। अथवा राधा का मोहन।अथवा राधा के पायल। मेरा भाई।या मेरी बहन,मेरे विद्धार्थी आदि इसके उदाहरण है।

(7)अधिकरण कारक- (में,पर)

संज्ञा या सर्वनाम का वह रूप,जो क्रिया का आधार हो,अधिकरण कारक कहलता है।

जैसे-ड़ाल पर कोयल कूकती है। अथवा कमरेमें अतिथि बैठे हैं।

कभी-कभी विभक्ति-लोप से भी अधिकरण कारक बनता है।जैसे-इस जगह दुर्घटना हुई थी।या उस समय मुझे याद नहीं रहा। वाक्यों में जगह और समय अधिकरण कारक है,पर उनकेआगे की विभक्तियाँ लुप्त हैं।

(8)सम्बोंधन कारक- (हे,अरे,अजी)

संज्ञा के जिस रूप से किसी को पुकारना,चेतावनी देना या संबोधन करना आदि सूचित होउसे संबोधनकारक कहते हैं।जैसे-हे ईश्वर! तुम्हीं रक्षक हो।,ए! तुम क्या करते हो? , अजी! सुनते हो?

उपसर्ग और प्रत्यय

उपसर्ग = उप (समीप) + सर्ग (सृष्टि करना) का अर्थ है- किसी शब्द के समीप आ कर नया शब्द बनाना।

परिभाषा- "जो शब्दांश शब्दों में जुड़ कर उनके अर्थ में कुछ विशेषता लाते हैं, वे उपसर्ग कहलाते हैं।"

जैसे-प्र(+)हार -प्रहार ,'हार' शब्द का अर्थ है पराजय। परंतु इसी शब्द के आगे 'प्र' शब्दांश को जोड़ने से नया शब्द बनेगा - 'प्रहार' (प्र + हार) जिसका अर्थ है चोट करना।

हिन्दी में प्रचलित उपसर्गों को निम्नलिखित भागों में विभाजित किया जा सकता है-

1. **संस्कृत के उपसर्ग,**
2. **हिन्दी के उपसर्ग,**
3. **उर्दू और फ़ारसी के उपसर्ग,**
4. **अंग्रेज़ी के उपसर्ग,**

संस्कृत उपसर्ग-संस्कृत भाषा के ऐसे उपसर्ग जो हिंदी में भी प्रयोग होता हो ,संस्कृत उपसर्ग है।प्रमुख संस्कृत उपसर्ग निम्नलिखित है-

1.संस्कृतकेउपसर्ग-अति,अधि,अनु,अप आदि।

क्रमउपसर्ग	अर्थ	शब्द
1 अति	अधिक	अत्यधिक, अत्यंत, अतिरिक्त, अतिशय
2 अधि	ऊपर, श्रेष्ठ	अधिकार, अधिपति, अधिनायक
3 अनु	पीछे, समान	अनुचर, अनुकरण, अनुसार, अनुशासन
4 अप	बुरा, हीन	अपयश, अपमान, अपकार
5 अभि	सामने, चारों ओर,	अभियान, अभिषेक, अभिनय, अभिमुख

2.हिन्दी के उपसर्ग-अ,अन,कु,दु आदि ।

क्रमउपसर्ग	अर्थ	शब्द
1 अ	अभाव, निषेध	अछूता, अथाह, अटल
2 अन	अभाव, निषेध	अनमोल, अनबन, अनपढ़
3 कु	बुरा	कुचाल, कुचैला, कुचक्र
4 दु	कम, बुरा	दुबला, दुलारा, दुधारू
5 नि	कमी	निगोड़ा, निडर, निहत्था, निकम्मा

3.अरबी-फ़ारसी के उपसर्ग

क्रमउपसर्ग	अर्थ	शब्द
1 कम	थोड़ा, हीन	कमज़ोर, कमबख़्त, कमअक्ल
2 खुश	अच्छा	खुशनसीब, खुशखबरी, खुशहाल, खुशबू
3 गैर	निषेध	गैरहाज़िर, गैरक़ानूनी, गैरमुल्क, गैर-ज़िम्मेदार
4 ना	अभाव	नापसंद, नासमझ, नाराज़, नालायक
5 ब	और, अनुसार	बनाम, बदौलत, बदस्तूर, बगैर

4.अंग्रेज़ी के उपसर्ग

क्रमउपसर्ग	अर्थ	शब्द
1 सब	अधीन, नीचे	सब-जज सब-कमेटी, सब-इंस्पेक्टर
2 डिप्टी	सहायक	डिप्टी-कलेक्टर, डिप्टी-रजिस्ट्रार, डिप्टी-मिनिस्टर

3	वाइस	सहायक	वाइसराय, वाइस-चांसलर, वाइस-प्रेसीडेंट
4	जनरल	प्रधान	जनरल मैनेजर, जनरल सेक्रेटरी
5	चीफ़	प्रमुख	चीफ़-मिनिस्टर, चीफ़-इंजीनियर, चीफ़-सेक्रेटरी
6	हेड	मुख्य	हेडमास्टर, हेड क्लर्क

प्रत्यय-

प्रत्यय= प्रति (साथ में पर बाद में)+ अय (चलनेवाला) शब्द का अर्थ है,पीछे चलना।

परिभाषा- "जो शब्दांश शब्दों के अंत में विशेषता या परिवर्तन ला देते हैं, वे प्रत्यय कहलाते हैं।"

जैसे- दयालु= दया शब्द के अंत में आलु जुड़ने से अर्थ में विशेषता आ गई है। अतः यहाँ 'आलु' शब्दांश प्रत्यय है। प्रत्ययों का अपना अर्थ कुछ भी नहीं होता और न ही इनका प्रयोग स्वतंत्र रूप से किया जाता है।

प्रत्यय के दो भेद हैं-(1)कृत्(कृदंत) प्रत्यय(2) तद्धित प्रत्यय

(1)कृत् प्रत्यय- वे प्रत्यय जो धातु में जोड़े जाते हैं, कृत प्रत्यय कहलाते हैं। कृत् प्रत्यय से बने शब्द कृदंत (कृत्+अंत) शब्द कहलाते हैं। जैसे- लेख् + अक = लेखक। यहाँ अक कृत् प्रत्यय है, तथा लेखक कृदंत शब्द है।

क्रम	प्रत्यय	मूल शब्द\धातु	उदाहरण
1	अक	लेख्, पाठ्, कृ, गै	लेखक, पाठक, कारक, गायक
2	अन	पाल्, सह्, ने, चर्	पालन, सहन, नयन, चरण
3	अना	घट्, तुल्, वंद्, विद्	घटना, तुलना, वन्दना, वेदना
4	अनीय	मान्, रम्, दृश्, पूज्, श्रु	माननीय, रमणीय, दर्शनीय, पूजनीय,
5	आ,	सूख, भूल, जाग, पूज, इष्,	सूखा, भूला, जागा, पूजा, इच्छा, भिक्षा

(2)तद्धित प्रत्यय-

वे प्रत्यय जो धातु को छोड़कर अन्य शब्दों- संज्ञा, सर्वनाम व विशेषण में जुड़ते हैं, तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं। तद्धित प्रत्यय से बने शब्द तद्धितांत शब्द कहलाते हैं। जैसे- सेठ + आनी = सेठानी। यहाँ आनी तद्धित प्रत्यय हैं तथा सेठानी तद्धितांत शब्द है।

क्रम	प्रत्यय	शब्द	उदाहरण
1	आइ	पछताना, जगना	पछताइ, जगाइ
2	आइन	पण्डित, ठाकुर	पण्डिताइन, ठकुराइन

3 आई	पण्डित, ठाकुर, लड़, चतुर,	पण्डिताई, ठकुराई, लड़ाई, चतुराई
4 आनी	सेठ, नौकर, मथ	सेठानी, नौकरानी, मथानी

समास

परिभाषा (1)"दो या दो से अधिक शब्दों के योग से बने शब्द को समास कहते हैं।"
(कामताप्रसाद गुरु)

(2)"जब दो या दो से अधिक शब्द अपने संबंधी शब्दों कोछोड़कर एक मिल जाते हैं,तब उनके मेल कोसमास कहते हैं।" (वासुदेवनंदन प्रसाद)

(3)"दो अथवा दो से अधिक शब्दों के संयोग को समास कहते हैं।"
(उमेशचन्द्र शुक्ल)

समासकेछः प्रकारहैं-

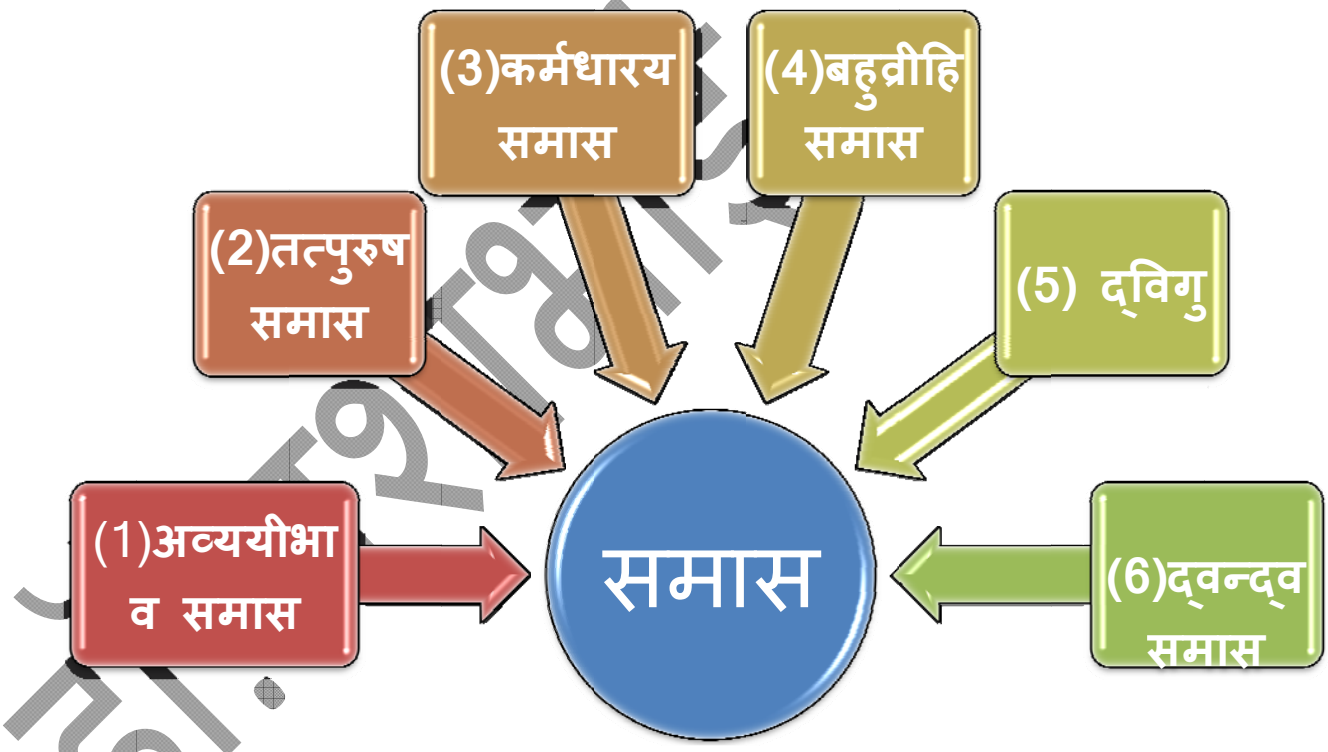

(1)अव्ययी भाव समास-इसमें पहला पद प्रधान होता है औरउपसर्ग जाति का तथा समस्त पद क्रियाविशेषण अव्यय होता है।

जैसे-यथासंभव,प्रतिदिन,भरपेट आदि में पहला पद अव्यय जाति का व प्रधान है इसलिए अव्ययी समास हैं।

(2)तत्पुरुष समास- अंतिम पद प्रधान,पहला पद दूसरे पद के साथ किसी विभक्ति द्वारा जुड़ा रहता है। जैसे-राजपुरुष (राजा का पुरुष)

इसके दो प्रकार है-(क)व्यधिकरण तत्पुरुष और समानाधिकरण तत्पुरुष

(क)व्यधिकरण तत्पुरुष-जो विभक्ति लोप से बनेतत्पुरुषसमास को व्यधिकरण तत्पुरुष कहा जाता है।

(ख)समानाधिकरण तत्पुरुष-जो विभक्ति योग से बने ऐसे समास को समानाधिकरण तत्पुरुष कहा जाता है।जैसे-देशभक्ति(देश की भक्ति)

समानाधिकरण तत्पुरुष के छःकारक विभक्ति के अनुसार छःभेद होते हैं-

कर्म तत्पुरुष	स्वर्गप्राप्त	(स्वर्ग को प्राप्त)
करण तत्पुरुष	मोहांध	(मोह से अंध)
संप्रदान तत्पुरुष	रसोई घर	(रसोई के लिए घर)
अपादान तत्पुरुष	कामचोर	(काम से चोर)
संबंध तत्पुरुष	गृहस्वामी	(गृह का स्वामी)
अधिकरण तत्पुरुष	पुरुषोत्तम	(पुरुषों में उत्तम)

(5) बहुव्रीहिसमास-इसमें कोई भी पद प्रधान नहीं होता और दोनों पद मिलकर किसी दूसरे पद की विशेषता बताता है।जैसे-

पीताम्बर-	(पीत है अंबर जिसका वह)	-कृष्ण
लंबोदर-	(लंबा है उदर जिसका वह)	-गणेश
सीतापति	(सीता का पति)	-राम

(6) कर्मधारय समास-जिस समास में पहला पद विशेषण होताहै और दूसरा पद विशेष्य होता है तथा प्रधान होता है।जैसे-नीलगाय -(नीली है जो गाय)

कर्मधारय समास के दो प्रकार हैं-

(अ)विशेषतावाचक कर्मधारय-जिस समास से विशेष-विशेषणका भाव सूचित होता हैउसे विशेषतावाचक कर्मधारयकहते हैं। पहला पद विशेषण और दूसरा पद विशेष्य होताहै। जैसे- नीलगाय -(नीली है जो गाय), महापुरुष- (महान है जो पुरुष)

(ब)उपमावाचक कर्मधारय-जिस समास से उपमेय,उपमान काभाव सूचित होता है उसे उपमावाचक कर्मधारय कहते हैं।

जैसे- कमलनयन- (कमल जैसे नयन) भवसागर-(भव रूपी सागर)

(7) द्विगु समास-जिस समास में पहला पद संख्यावाचक हो और समस्तशब्द समुदाय बोधक हो जाता है। जैसे-त्रिभुवन (त्रि+ भुवन)

इसके दो भेद हैं- *समाहार द्विगु तथा *उत्तरपदप्रधान द्विगु

*समाहारद्विगु-समाहार का अर्थ है-समुदाय।जैसे-त्रिभुवन त्रि+ भुवन अथवा नवरात्री

*उत्तरपदप्रधान द्विगु- उत्तरपदप्रधान का अर्थ होता है-अंतिम पद।

जैसे-दो माँ का-दुमाता

(6)द्वन्द्वसमास- जिस समास में सभी पद प्रधान होते हैं,उसेद्वन्द्व समास कहते हैं।

जैसे-भला-बुरा(भला या बुरा)इसके तीन प्रकार हैं-

(अ)इतरेतरद्वन्द्वसमास-और शब्द से जुड़े पद वाले समास कोइतरेतर द्वन्द्वसमासकहते हैं। जैसे- राम-लक्ष्मण,रात-दिन आदि।

(ब)समाहारद्वन्द्व समास-जिससमास में अन्य पद छिपे रहते हैं और अपने अर्थ का बोध अप्रत्यक्ष रूप से कराते हैं, उसेसमाहारद्वन्द्व कहते हैं। जैसे-हाथ-पाँव,घर-द्वार आदि।

(क)वैकल्पिक द्वन्द्व समास-जिस समास में विकल्पसूचक शब्दछिपा हो,उसे वैकल्पिकद्वन्द्व कहते हैं।

जैसे-भला-बुरा,पाप-पुण्य आदि।

युनिट-4

(विराम चिह्न, संधि,वाक्य-उसके रचना व अर्थ के आधार पर भेद)

विराम चिह्न किसे कहते हैं

जैसा कि विराम का अर्थ रुकना होता है, उसी प्रकार हिंदी व्याकरण में विराम शब्द का अर्थ है – ठहराव या रुक जाना। एक व्यक्ति अपनी बात कहने के लिए, उसे समझाने के लिए, किसी कथन पर बल देने के लिए, आश्चर्य आदि भावों की अभिव्यक्ति के लिए कहीं कम, कहीं अधिक समय के लिए ठहरता है।

परिभाषा- "भाषा के लिखित रूप में कुछ समय ठहरने के स्थान पर जो निश्चित संकेत चिह्न लगाये जाते है, उन्हें विराम–चिह्नकहते हैं।"

वाक्य में विराम–चिह्नों के प्रयोग से भाषा में स्पष्टता और सुन्दरता आ जाती है तथा भाव समझने में भी आसानी होती है। यदि विराम–चिह्नों का यथा स्थान उचित प्रयोग न किया जाये तो अर्थ का अनर्थ हो जाता है। उदाहरण––

रोको, मत जाने दो।

रोको मत, जाने दो।

इस प्रकार विराम–चिह्नों से अर्थ एवं भाव में परिवर्तन हो जाता है। इनका ध्यान रखना आवश्यक है।

नाम	विराम चिह्न
अल्प विराम	(,)
अर्द्ध विराम	(;)
पूर्ण विराम	(।)
प्रश्नवाचक चिह्न	(?)
विस्मयसूचक चिह्न	(!)
अवतरण या उद्धरण चिह्न	इकहरा — (‘ ’), दुहरा — (“ ”)
योजक चिह्न	(–)
कोष्ठक चिह्न	( ) { } [ ]
विवरण चिह्न	(:–)
लोप चिह्न	(.....)
विस्मरण चिह्न	(^)
संक्षेप चिह्न	(.)
निर्देश चिह्न	(–)
तुल्यतासूचक चिह्न	(=)
संकेत चिह्न	(*)
समाप्ति सूचक चिह्न	(–:–)

विराम–चिह्नों का प्रयोग–

1. अल्प विराम किसे कहते है –(,)

अल्प विराम का अर्थ है, थोड़ी देर रुकना या ठहरना। अंग्रेजी में इसे हम ‘कोमा’ कह कर पुकारते हैं।

(1) वाक्य में जब दो या दो से अधिक समान पदों पदांशो अथवा वाक्यों में संयोजक अव्यय 'और' की संभावना हो, वहाँ अल्प विराम का प्रयोग होता है। उदाहरण--पदों में--पंकज, लक्ष्मण, राजेश और मोहन ने विद्यालय में प्रवेश किया।

वाक्यों में--मोहन रोज खेल के मैदान में जाता है, खेलता है और वापस अपने घर चला जाता है।

(2) जहाँ शब्दों की पुनरावृत्ति की जाए और भावों की अधिकता के कारण उन पर अधिक बल दिया जाए। उदाहरण--सुनो, सुनो, वह नाच रही है।

(3) जब कई शब्द जोड़े से आते है, तब प्रत्येक जोड़े के बाद अल्प विराम लगता है। उदाहरण--सुख और दुःख, रोना और हँसना,

(4) क्रिया विशेषण वाक्यांशों के साथ, उदाहरण--वास्तव में यह बात, यदि सच पूछो तो, मैं भूल ही गया था।

(5) संज्ञा वाक्य के अलावा, मिश्र वाक्य के शेष बड़े उपवाक्यों के बीच में। उदाहरण--

यह वही पैन है, जिसकी मुझे आवश्यकता है।

चिंता चाहे जैसी भी हो, मनुष्य को जला देती है।

(6) वाक्य के भीतर एक ही प्रकार के शब्दों को अलग करने में। उदाहरण--मोहन ने सेब, जामुन, केले आदि खरीदे।

(7) उद्धरण चिह्नों के पहले, उदाहरण--वह बोला, "मैं तुम्हें नहीं जानता।"

(8) समय सूचक शब्दों को अलग करने में। उदाहरण--कल शुक्रवार, दिनांक 18 मार्च से परीक्षाएँ प्रारम्भ होंगी।

(9) पत्र में अभिवादन, समापन के साथ। उदाहरण--पूज्य पिताजी,भवदीय,मान्यवर ,

2.अर्द्ध विराम चिह्न किसे कहते है ?

अर्द्ध विराम का प्रयोग प्रायः विकल्पात्मक रूप में ही होता है। अंग्रेजी में इसे 'सेमी कॉलन' कहते हैं।

(1) जब अल्प विराम से अधिक तथा पूर्ण विराम से कम ठहरना पड़े तो अर्द्ध विराम(;) का प्रयोग होता है। उदाहरण--बिजली चमकी ; फिर भी वर्षा नहीं हुई।एम. ए. ; एम. एड. शिक्षक ने मुझसे कहा; तुम पढ़ते नहीं हो।शिक्षा के क्षेत्र में छात्राएँ बढ़ती गई; छात्र पिछड़ते गए।

(2) एक प्रधान पर आश्रित अनेक उपवाक्यों के बीच में। उदाहरण--

जब तक हम गरीब है; बलहीन है; दूसरे पर आश्रित है; तब तक हमारा कुछ नहीं हो सकता।

जैसे ही सूर्योदय हुआ; अँधेरा दूर हुआ; पक्षी चहचहाने लगे और मैं प्रातः भ्रमण को चल पड़ा।

3.पूर्ण विराम (।)

पूर्ण विराम का अर्थ है पूरी तरह से विराम लेना, अर्थात् जब वाक्य पूर्णतः अपना अर्थ स्पष्ट कर देता है तो पूर्ण विराम का प्रयोग होता है अर्थात जिस चिह्न के प्रयोग करने से वाक्य के पूर्ण हो जाने का ज्ञान होता है, उसे पूर्ण विराम कहते है। हिन्दी में इसका प्रयोग सबसे अधिक होता है। पूर्ण विराम (Purn Viram) का प्रयोग नीचे उदाहरणों में देखें –

(1) साधारण, मिश्र या संयुक्त वाक्य की समाप्ति पर। उदाहरण–

अजगर करे ना चाकर, पंछी करें ना काम।

दास मलूका कह गए, सबके दाता राम।।

(2) प्रायः शीर्षक के अन्त में भी पूर्ण विराम का प्रयोग होता है। उदाहरण–

नारी और वर्तमान भारतीय समाज।

(3) अप्रत्यक्ष प्रश्नवाचक वाक्य के अन्त में पूर्ण विराम लगाया जाता है। उदाहरण–

उसने मुझे बताया नहीं कि वह कहाँ जा रहा है।

4.प्रश्नवाचक चिह्न (?)प्रश्नवाचक चिह्न का प्रयोग प्रश्न सूचक वाक्यों के अन्त में पूर्ण विराम के स्थान पर किया जाता है। इसका प्रयोग निम्न स्थिति में किया जाता है–

क्या बोले, वे चोर है ?

क्या वे घर पर नहीं हैं ?

कल आप कहाँ थे?

5.विस्मयादिबोधक चिह्न (!)

जब वाक्य में हर्ष, विषाद, विस्मय, घृणा, आश्चर्य, करुणा, भय आदि भाव व्यक्त किए जाएँ तो वहाँ इस विस्मयादिबोधक चिह्न (!) का प्रयोग किया जाता है। इसके अलावा आदर सूचक शब्दों, पदों और वाक्यों के अन्त में भी इसका प्रयोग किया जाता है। उदाहरण–

(1) हर्ष सूचक– तुम्हारा कल्याण हो !हे भगवान! अब तो तुम्हारा ही आसरा है।

(2) करुणा सूचक– हे प्रभु! मेरी रक्षा करो

(3) घृणा सूचक– इस दुष्ट पर धिक्कार है!

(4) विषाद सूचक– हाय राम! यह क्या हो गया।

(5) विस्मय सूचक– सुनो! मोहन पास हो गया।

6.उद्धरण या अवतरण चिह्न –

जब किसी कथन को ज्यों का त्यों उद्धृत किया जाता है तो उस कथन के दोनों ओर इसका प्रयोग किया जाता है, इसलिए इसे अवतरण चिह्न या उद्धरण चिह्न कहते है। इस चिह्न के दो रूप होते है–

(i) इकहरा उद्धरण (' ')–

जब किसी कवि का उपनाम, पुस्तक का नाम, पत्र–पत्रिका का नाम, लेख या कविता का शीर्षक आदि का उल्लेख करना हो तो इकहरे उद्धरण चिह्न का प्रयोग होता है। उदाहरण– –

रामधारीसिंह 'दिनकर' ओज के कवि है।

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

'रामचरित मानस' के रचयिता तुलसीदास है।

'राजस्थान पत्रिका' एक प्रमुख समाचार–पत्र है।

कहावत सही है कि, 'उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे'।

(ii) दुहरा उद्धरण (" ")–

जब किसी व्यक्ति या विद्वान तथा पुस्तक के अवतरण या वाक्य को ज्यों का त्यों उद्धृत किया जाए, तो वहाँ दुहरे उद्धरण चिह्न का प्रयोग किया जाता है। उदाहरण-–

"स्वतंत्रता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है।"—तिलक।

तुलसीदास ने कहा- ''सिया राममय सब जग जानी, करऊं प्रणाम जोरि जुग पानि।''

7.योजक चिह्न (-)

इसे समास चिह्न भी कहते है।अंग्रेजी में प्रयुक्त हाइफन (-) को हिन्दी में योजक चिह्न कहते है। हिन्दी में अधिकतर इस चिह्न (-) के स्थान पर डेश (–) का प्रयोग प्रचलित है। यह चिह्न सामान्यतः दो पदों को जोड़ता है और दोनों को मिलाकर एक समस्त पद बनाता है लेकिन दोनों का स्वतंत्र अस्तित्व बना रहता है।कमल-से पैर। कली-सी कोमलता।

(1) दो शब्दों को जोड़ने के लिए तथा द्वन्द्व एवं तत्पुरुष समास में। उदाहरण-–

सुख-दुःख, माता-पिता,।

(2) पुनरुक्त शब्दों के बीच में। उदाहरण–– धीरे-धीरे, घर -घर, रोज -रोज।

(3) तुलना वाचक सा, सी, से के पहले लगता है। उदाहरण––भरत-सा भाई, सीता-सी माता।

(4) शब्दों में लिखी जाने वाली संख्याओं के बीच। उदाहरण––एक-चौथाई

8.कोष्ठक चिह्न ( )

किसी की बात को और स्पष्ट करने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है। कोष्ठक में लिखा गया शब्द प्रायः विशेषण होता है।

इस चिह्न का प्रयोग–

(1) वाक्य में प्रयुक्त किसी पद का अर्थ स्पष्ट करने हेतु। उदाहरण––आपकी ताकत (शक्ति) को मैं जानता हूँ।

आवेदन-पत्र जमा कराने की तिथि में सात दिन की छूट (Relax) दी गई है।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद (भारत के प्रथम राष्ट्रपति) बेहद सादगी पसन्द थे।

(2) नाटक या एकांकी में पात्र के अभिनय के भावों को प्रकट करने के लिए। उदाहरण–– राम – (हँसते हुए) अच्छा जाइए।

9.विवरण चिह्न (:–)

किसी कही हुई बात को स्पष्ट करने के लिए या उसका विवरण प्रस्तुत करने के लिए वाक्य के अंत में इसका प्रयोग होता है। इसे अंग्रेजी में 'कॉलन एंड डेश' कहते है। उदाहरण––सर्वनाम छः प्रकार के होते हैः- पुरुषवाचक, निजवाचक, सम्बन्धवाचक, निश्चितवाचक, अनिश्चितवाचक, प्रश्नवाचक।

वेद चार हैः- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद।

पुरुषार्थ चार है:– धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष।

10.लोप सूचक चिह्न (....)

जहाँ किसी वाक्य या कथन का कुछ अंश छोड़ दिया जाता है, वहाँ लोप सूचक चिह्न का प्रयोग किया जाता है। उदाहरण––

तुम मान जाओ वरना.....।

मैं तो परिणाम भोग रहा हूँ, कहीं आप भी.....।

11.विस्मरण चिह्न (^)

इसे हंस पद या त्रुटिपूरक चिह्न भी कहते है। जब किसी वाक्य या वाक्यांश में कोई शब्द लिखने से छूट जाये तो छूटे हुए शब्द के स्थान के नीचे इस चिह्न का प्रयोग कर छूटे हुए शब्द या अक्षर को ऊपर लिख देते है। उदाहरण–-

मेरा भारत ^ देश है।

मुझे आपसे ^ परामर्श लेना है।

12.संक्षेप चिह्न या लाघव चिह्न (०)- किसी बड़े शब्द को संक्षेप में लिखने हेतु उस शब्द का प्रथम अक्षर लिखकर उसके आगे यह चिह्न लगा देते है। प्रसिद्धि के कारण लाघव चिह्न होते हुए भी वह पूर्ण शब्द पढ़ लिया जाता है। उदाहरण–-

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय – रा०उ०मा०वि०।

भारतीय जनता पार्टी = भा० ज० पा०

मास्टर ऑफ आर्ट्स = एम० ए०

13.निर्देशक चिह्न (–)यह चिह्न योजक चिह्न (-) से बड़ा होता है। इस चिह्न के दो रूप है–1. (–) 2. (—)। अंग्रेजी में इसे 'डैश' कहते है।महाराज- द्वारपाल! जाओ।

द्वारपाल- जो आज्ञा स्वामी!

(1) उद्धृत वाक्य के पहले। उदाहरण-–वह बोला –"मैं नहीं जाऊँगा।"

(3) समानाधिकरण शब्दों, वाक्यांशों अथवा वाक्यों के बीच में। उदाहरण–-

आँगन में ज्योत्सना–चाँदनी–छिटकी हुई थी।

14.तुल्यतासूचक चिह्न (=)- समानता या बराबरी बताने के लिए या मूल्य अथवा अर्थ का ज्ञान कराने के लिए तुल्यतासूचक चिह्न का प्रयोग किया जाता है। उदाहरण–-

1 लीटर = 1000 मिलीलीटर , वायु = समीर

15.संकेत चिह्न (*)- जब कोई महत्त्वपूर्ण बातें बतानी हो तो उसके पहले संकेत चिह्न लगा देते है। उदाहरण-स्वास्थ्य सम्बन्धी निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए–

प्रातःकाल उठना चाहिए।भ्रमण के लिए जाना चाहिए।

16.समाप्ति सूचक चिह्न या इतिश्री चिह्न (–०–)–

समाप्ति सूचक चिह्न- किसी अध्याय या ग्रन्थ की समाप्ति पर इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है। यह चिह्न कई रूपों में प्रयोग किया जाता है।उदाहरण-(– :: –), (—x—x—)

संधि

संधि- (सम् + धि) शब्द का अर्थ है 'मेल'।

परिभाषाः- दो निकटवर्ती वर्णों के परस्पर मेल से जो विकार (परिवर्तन) होता है वह संधि कहलाता है।

जैसे - सम् + तोष = संतोष ; देव + इंद्र = देवेंद्र ; भानु + उदय = भानूदय।

दो ध्वनियों (वर्णों) के परस्पर मेल को सन्धि कहते हैं।

संधि के भेद-संधि तीन प्रकार की होती हैं -

1.स्वर संधि 2.व्यंजन संधि 3.विसर्ग संधि

स्वर संधि-दो स्वरों के मेल से होने वाले विकार (परिवर्तन) को स्वर-संधि कहते हैं।जैसे - विद्या + आलय = विद्यालय। स्वर-संधि पाँच प्रकार की होती हैं -

(1)दीर्घ संधि (2)गुण संधि (3)वृद्धि संधि (4)यण संधि (5)अयादि संधि

1.दीर्घ संधि- ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ के बाद यदि ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ आ जाएँ तो दोनों मिलकर दीर्घ आ, ई और ऊ हो जाते हैं। जैसे -(क) अ/आ + अ/आ = आ

अ + अ =आ --> धर्म + अर्थ = धर्मार्थ / अ + आ = आ -->हिम + आलय =हिमालय

2.गुण संधि- इसमें अ, आ के आगे इ, ई हो तो ए ; उ, ऊ हो तो ओ तथा ऋ हो तो अर् हो जाता है। इसे गुण-संधि कहते हैं। जैसे - अ + इ = ए ; नर + इंद्र = नरेंद्र

अ + ई = ए ; नर + ईश = नरेश

3.वृद्धि संधि-अ, आ का ए, ऐ से मेल होने पर ऐ तथा अ, आ का ओ, औ से मेल होने पर औ हो जाता है। इसे वृद्धि संधि कहते हैं। जैसे -आ + ए = ऐ ; सदा + एव = सदैव, आ + ऐ = ऐ ; महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य

4.यण संधि- इ, ई, उ, ऊ,'ऋ' के आगे किसी विजातीय स्वर के आए तब यण-संधि कहते हैं।इ + अ = य् + अ ; यदि + अपि = यद्यपि,

5.अयादि संधि-ए, ऐ और ओ औ से परे किसी भी स्वर के होने पर क्रमशः अय्, आय्, अव् और आव् हो जाता है। इसे अयादि संधि कहते हैं।

(क) ए + अ = अय् + अ ; ने + अन = नयन

(ख) ऐ + अ = आय् + अ ; गै + अक = गायक

(ग) ओ + अ = अव् + अ ; पो + अन = पवन

(घ) औ + अ = आव् + अ ; पौ + अक = पावक

2.व्यंजन संधि-

परिभाषाः- "व्यंजन का व्यंजन से अथवा किसी स्वर से मेल होने पर जो परिवर्तन होता है उसे व्यंजन संधि कहते हैं।" जैसे-शरत् + चंद्र = शरच्चंद्र।

'व्यंजन' के साथ 'स्वर' का 'स्वर' तथा 'व्यंजन' का या 'व्यंजन' तथा 'व्यंजन' का मेल होने पर उसमे जो विकार होता है , व्यंजन संधि कहते है ।

जैसे - जगत् + ईश = जगदीश (त् + ई = व्यंजन + स्वर)

व्यंजन संधि के नियम

1.'त' से परे च,ज,ट,ड,द,ल, न में से कोई पड़ा हो तो 'त' को उसी में बदल देते है।

जैसे - सत् + चित् + आनन्द = सच्चिदानन्द सत् + जन् = सज्जन

वृहत् + टीका = वृहट्टीका उद् + डयन = उड्डयन

भगवत् +दर्शन = भगवद् दर्शन तत् + लीन = तल्लीन

2.'त' से परे यदि 'श' हो तो 'त' को 'च' और 'श' का 'छ' हो जाता है ।

जैसे - सत् + शास्त्र = सच्छास्त्र उत् + श्वास = उच्छवास

3.'त' से परे यदि 'ह' हो तो 'त' को 'द' और 'ह' को 'ध' हो जाता है ।

जैसे - उत् + हार = उद्धार उत् + हरण = उद्धरण

4.यदि शब्द में 'ऋ' , 'र' , 'ष' से परे 'न' हो तो न का 'ण' हो जाता है ।

जैसे - प्र + मान = प्रमाण कृष् + न = कृष्ण

5.किसी वर्ग के पहले वर्ण - ऋ, च, द, त, प, से परे कोई स्वर वर्ग का तीसरा चौथा वर्ण (ग, छ, ज, झ, ड, ढ, ध, ब, भ) 'य' 'र' 'ल' 'व' अथवा 'ह' हो तो पहले वर्ण को उसी वर्ण का तीसरा वर्ण हो जाता है ।

जैसे - दिक् + अम्बर = दिगम्बर दिक् + दर्शन = दिग्दर्शन

अच् + अन्त = अजन्त   षट + दर्शन = षड्दर्शन

जगत् + ईश = जगदीश   अब् + ज = अब्ज

6.'म्' के बाद यदि 'ऋ' से 'म्' तक का कोई वर्ण हो तो 'म' के अनुस्वार अथवा बाद के वर्ण का पाँचवा वर्ण हो जाता है ।

जैसे - सम् + कल्प = सड्कल्प = संकल्प   सम + गत = संगत

सम + पूर्ण = सम्पूर्ण = संपूर्ण

7. 'म' से परे ऋ से म् तक के वर्णो को छोड़कर कोई और व्यंजन हो तो 'म्' का अनुस्वार हो जाता है

जैसे - सम् + हार = संहार   सम् + योग = संयोग

8. किसी वर्ण के पहले या तीसरे वर्ण (ऋ, ग्, च्, ज् आदि) के परे यदि किसी वर्ण का पाँचवा वर्ण (ड़, ण, न, म) हो तो पहले या तीसरे वर्ण को अपने वर्ग का पाँचवा वर्ण हो जाता है ।

जैसे - वाक् + मय = वाड़्मय   उत् + मुख = उन्मुख

9. स्वर से परे यदि 'छ' आवे तो 'छ' के पूर्व 'च' अधिक जुड़ जाता है ।

आ + छादन = आच्छादन   स्व + छन्द = स्वच्छन्द
वि + छेद = विच्छेद

10. 'स' से पूर्व 'अ' आ से भिन्न कोई स्वर हो तो 'स' का 'ष' हो जाता है ।

अभि + सेक = अभिषेक

विसर्ग-संधि-विसर्ग (:) के बाद स्वर या व्यंजन आने पर विसर्ग में जो विकार होता है उसे विसर्ग-संधि कहते हैं। जैसे- मनः + अनुकूल = मनोनुकूल

विसर्गसंधिः- विसर्ग से परे स्वर या व्यंजन आने से विसर्ग में जो विकार होता है, उसे विसर्ग संधि कहते हैं।

डॉ.जगदीश पटेल

विसर्ग संधि के नियम

1.यदि 'अ' से परे विसर्ग हो और उसके सामने वर्ग का तीसरा, चौथा, या पाँचवा वर्ग अथवा य, र, ल, व, में से कोई वर्ग हो तो विसर्ग 'अः' के स्थान पर 'ओ' हो जाता है।

जैसे– मनः + हर = मनोहर मनः + योग = मनोयोग

2.विसर्ग से पहले 'अ', 'आ' को छोड़कर कोई दूसरा स्वर हो और उसके सामने कोई स्वर वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवा अक्षर अथवा अन्तस्थ (य, र, ल, व) में से कोई वर्ग हो तो विसर्ग का 'र' हो जाता है ।

जैसे– निः + जन = निर्जन (इ +ः = र) निः + आशा = निराशा

3.विसर्गसेपरे'च' या 'छ' होने पर विसर्ग का 'श' हो जाता है ।

जैसे – निः + चिन्त = निश्चिन्त निः + छल = निश्छल

4. विसर्ग से परे 'ट' 'ड' होने पर विसर्ग का 'ष' हो जाता है ।

जैसे – धनु + टंकार = धनुष्टंकार

5.विसर्ग से परे 'त' 'थ' होने पर विसर्ग का 'स' हो जाता है ।

जैसे – दुः + तर = दुस्तर निः + तार = निस्तार

6.विसर्ग से परे श, ष, स, होने पर विसर्ग को उन्हीं में बदल देतें है ।

जैसे – दुः + शासन = दुस्शासन निः + संदेह = निस्संदेह

7.विसर्ग से पूर्व 'अ' हो और बाद में 'अ' या 'आ' के अतिरिक्त कोई स्वर हो तो विसर्गका लोप हो जाता है ।

जैसे – अतः + एव = अतएव

8.विसर्ग से पूर्व 'इ' अथवा 'उ' रहने पर और सामने क , ख, प , फ आने पर विसर्ग का 'ष' हो जाता है ।

जैसे – निः + कपट = निष्कपट निः + फल = निष्फल दुः + कर्म = दुष्कर्म

हिन्दी की विशेष संधियाँ-

1.'ह' का लोप – जहाँ, कहाँ आदि के पीछे 'ही' आने पर 'हाँ' लुप्त हो जाता है और अन्तिम 'ई' पर अनुस्वार लग जाता है ।

जैसे– कहाँ + ही = कहीं यहाँ + ही = यहीं वहाँ + ही = वहीं

2. ह को भ – जब , तब , कब , सब आदि शब्दों के पीछे 'ही' आने पर 'ही' के 'ह' को 'भ' हो जाता है और पहले 'ब' का लोप हो जाता है ।

जैसे – जब + ही = जभी , तब + ही = तभी, कब + ही = कभी

3. 'र' का लोप – कही – कही संस्कृत के 'र' लोप, दीर्घ और यण् आदि सन्धियों के नियम हिन्दी में लागू नही होते –

जैसे – अन्तर + राष्ट्रीय = अन्तर्राष्ट्रीय स्त्री + उपयोगी = स्त्रियोपयोगी

4. विसर्ग को ओ – संस्कृत में 'अ' के बाद विसर्ग और परे 'क' होने पर विसर्ग का 'स' हो जाता है । जैसे – नमः + कार = नमस्कार.

वाक्य की परिभाषा और अर्थ और रचना की दृष्टि से भेद-

वाक्य भाषा की सबसे बड़ी सार्थक इकाई है जबकि ध्वनि सबसे छोटी। ध्वनियों के समुच्चय से शब्द बनता है और सार्थक शब्दों के समुच्चय से वाक्य बनता है। जिससे भाषिक अभिव्यकित की प्रक्रिया पूर्ण होती है।

वाक्यकी परिभाषा-

(1)"दो या दो से अधिक पदों के सार्थक समूह को, जिसका पूरा पूरा अर्थ निकलता है, वाक्य कहते हैं"।

(2)"वक्ता के कथन को पूर्णत: व्यक्त करने वाले सार्थक शब्द समूह को वाक्य कहते हैं।"

(3)"जब विभिन्न पद किसी किरयापद से अन्वित होकर एक विचारखण्ड की पूर्ण तथा संगत रूप में व्यक्त करें,तो उसे वाक्य कहते हैं।"

वाक्य के अंग-वाक्य के दो अंग है:-(1)उद्देश्य-जिसके बारे में कुछ बताया जाता है, उसे उद्देश्य कहते हैं; जैसे- अनुराग खेलता है। सचिन दौड़ता है। इन वाक्यों में 'अनुराग' और 'सचिन' के विषय में बताया गया है। अत: ये उद्देश्य हैं।

(2)विधेय-वाक्य के जिस भाग में उद्देश्य के बारे में जो कुछ कहा जाता है, उसे विधेय कहते हैं।जैसे- अनुराग खेलता है। इस वाक्य में 'खेलता है' विधेय है।

वाक्य के भेद –रचनाकेआधार (2) अर्थ के आधार

(1) रचनाकेअनुसारवाक्यकेनिम्नलखितभेद हैं-

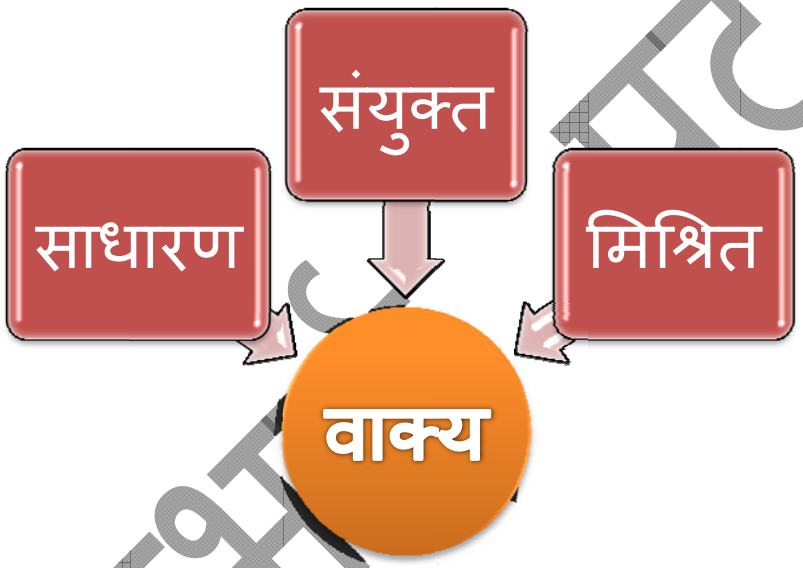

1.साधारणवाक्य-जिसवाक्यमेंकेवलएकही(उद्देश्य) कर्ताऔरएकहीसमापिकाक्रियाहो, वहसाधारणवाक्यकहलाताहै।

जैसे -1. बच्चादूधपीताहै।

हिमांकगेंदसेखेलताहै।

कुन्दनपुस्तकपढ़रहीहैं।

यहाँ क्रमशः बच्चा,हिमांक,कुन्दन उद्देश्य(कर्ता)

2. संयुक्तवाक्य-दोअथवादोसेअधिकसाधारणवाक्यजबसामानाधिकरणसमुच्चयबोधकों(पर, किन्तु, और, याआदि)सेजुड़ेहोतेहैं, तोवेसंयुक्तवाक्यकहलातेहैं।येचारप्रकारकेहोतेहैं-

(i) संयोजक-जबएकसाधारणवाक्यदूसरेसाधारणयामिश्रितवाक्यसेसंयोजकअव्ययद्वाराजुड़ाहोताहै। जैसे-गीतागईऔरसीताआई।

(ii) विभाजक -जबसाधारणअथवामिश्रवाक्योंकापरस्परभेदयाविरोधकासंबंधरहताहै। जैसे- वहमेहनततोबहुतकरताहैपरफलनहींमिलता।

(iii) विकल्पसूचक-जबदोबातोंमेंसेकिसीएककोस्वीकारकरनाहोताहै। जैसे - यातोउसेमैंअखाड़ेमेंपछाड़ूँगायाअखाड़ेमेंउतरनाहीछोड़दूँगा।

(iV) परिणामबोधक -जबएकसाधारणवाक्यदसूरेसाधारणयामिश्रितवाक्यकापरिणामहोताहै। जैसे -आजमुझेबहुतकामहैइसलिएमैंतुम्हारेपासनहींआसकूँगा।

3. मिश्रितवाक्य

जबकिसीविषयपरपूर्णविचारप्रकटकरनेकेलिएकईसाधारणवाक्योंकोमिलाकरएकवाक्यकीरचनाक रनीपड़तीहैतबऐसेरचितवाक्यहीमिश्रितवाक्यकहलातेहैं।

विशेष-

(1)इनवाक्योंमेंएकमुख्ययाप्रधानउपवाक्यऔरएकअथवाअधिकआश्रितउपवाक्यहोतेहैंजोसमुच्चय बोधकअव्ययसेजुड़ेहोतेहैं।

(2) मुख्यउपवाक्यकीपुष्टि, समर्थन, स्पष्टताअथवाविस्तारहेतुहीआश्रितवाक्यआतेहै।

आश्रितवाक्यतीनप्रकारकेहोतेहैं-

(i) संज्ञाउपवाक्य।

(ii) विशेषणउपवाक्य।

(iii) क्रिया-विशेषणउपवाक्य।

(i)संज्ञाउपवाक्य-

जबआश्रितउपवाक्यकिसीसंज्ञाअथवासर्वनामकेस्थानपरआताहैतबवहसंज्ञाउपवाक्यकहलाताहै। जैसे -वहचाहताहैकिमैंयहाँकभीनआऊँ। यहाँ-किमैंकभीनआऊँ, यहसंज्ञाउपवाक्यहै।

(ii)विशेषणउपवाक्य-

जोआश्रितउपवाक्यमुख्यउपवाक्यकीसंज्ञाशब्दअथवासर्वनामशब्दकीविशेषताबतलाताहैवहविशेष णउपवाक्यकलाताहै। जैसे -जोघड़ीमेजपररखीहैवहमुझेपुरस्कारस्वरूपमिलीहै। यहाँ- जोघड़ीमेजपररखीहैयहविशेषणउपवाक्यहै।

(iii) क्रिया-विशेषणउपवाक्य-

जबआश्रितउपवाक्यप्रधानउपवाक्यकीक्रियाकीविशेषताबतलाताहैतबवहक्रिया-

विशेषणउपवाक्यकहलाताहै। जैसे -जबवहमेरेपासआयातबमैंसोरहाथा।

यहाँपरजबवहमेरेपासआयायहक्रिया-विशेषणउपवाक्यहै।

02 – अर्थकेआधार-अर्थकेआधारपरआठप्रकारकेवाक्यहोतेहैं-

1.विधानवाचकवाक्य- वहवाक्यजिससेकिसीप्रकारकीजानकारीप्राप्तहोतीहै, विधिसूचकवाक्यकहलाताहै। जैसे- रामकेपिताकानामदशरथहै।रामघरजाताहै। आदि

2.नकारात्मकवाक्य–

जिनवाक्योंमेकिसीबातकेनहोनेकाबोधहोउन्हें नकारात्मकवाक्यकहतेहैं।जैसे- रामघरनहींजाताहै। आदि

3.प्रश्नवाचकवाक्य-

जिनवाक्योंमेकिसीप्रकारकेप्रश्नकियेजानेकाबोधहो उन्हे प्रश्नवाचकवाक्य कहतेहैं।जैसे - क्या रामघरजाताहै? आदि

4.विस्म्यादिवाचकवाक्य - वह वाक्य जिससे किसी प्रकार की गहरी अनुभूति (दया , प्रेम, दुख) का प्रदर्शन किया जाता है, विस्मयादि बोधक वाक्य कहलाता है। जैसे - वाह ! राम ने तो कमल कर दिया। आदि

5.आज्ञावाचकवाक्य -

वहवाक्यजिसकेद्वाराकिसीप्रकारकीआज्ञादीजातीहैयाप्रार्थनाकियाजाताहै, आज्ञावाचक वाक्यकहलाताहै। जैसे–बाजारसेफललेकरआओ । कृपयाबैठजाइए। आदि

6.इच्छावाचकवाक्य-

जिनवाक्योंमेकिसीइच्छाकेहोनेकाबोधहोउन्हे इच्छावाचकवाक्य कहतेहैं।जैसे- भगवानआपकीसारीइच्छापूरीकरें। आदि

7.संदेहवाचकवाक्य-

जिनवाक्योंमेकिसी संदेह केहोने काबोधहोउन्हे संदेह वाचकवाक्य कहतेहैं।जैसे– होसकताहैवोआजाये । आदि

8संकेतवाचकवाक्य- जिनवाक्योंमेकिसी संकेत केहोनेकाबोधहोउनहे संकेत वाचकवाक्य कहतेहैं।जैसे– अगरबारिशनहोतीतोखेतीसुखजाती । आदि

लधुत्तरी प्रश्न

1. संधि के कितने प्रकार है?

2. वाक्य भाषा की सबसे बड़ी सार्थक इकाई है। हा / ना

3. स्वर संधि का कोई एक उदा. बताइए।

4. वाक्य के <u>दो</u> अंग है।

5. स्वर संधि के कितने प्रकार है?

6. वाक्य में उद्देश्य के बारे में बताए उसे विधेय कहते हैं। हा / ना

7. रचना के आधार पर वाक्य के कितने प्रकार हैं?

8. एक कर्ता और एक क्रिया युक्त वाक्य <u>साधारण</u> वाक्य है।

9. अर्थ के आधार पर वाक्य के <u>8</u> प्रकार हैं।

10.संकेत वाचक --------का प्रकार है।

"कर्म और समज हमारे हाथ में है। शेष नहीं।"

डॉ.जशाभाई पटेल

(नरोड़ा कॉलेज,अहमदाबाद)

डॉ.ज. पटेल